इमाम ग़ज़ाली

दुनिया की समझ

बिस्मिल्लाहिर-रहमानिर-रहीम!

परिचय

शानदार विद्वान इमाम ग़ज़ाली से जान-पहचान बेशक महान आध्यात्मिक मूल्यों, इस दुनिया के सार की गहरी समझ और इंसानी ज़िंदगी और दिल के सार को समझने में मदद करेगी।

यह कोई इत्तेफ़ाक नहीं है कि इंग्लैंड की मशहूर ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी में पढ़ाने के दौरान इमाम ग़ज़ाली की कई किताबों का इस्तेमाल किया जाता है।

इमाम ग़ज़ाली का जन्म 1058 में ईरानी शहर तुस में हुआ था और 1111 में उसी शहर में उनका निधन हो गया। हालाँकि इमाम ग़ज़ाली का निधन लगभग एक हज़ार साल पहले हो गया था, लेकिन उनके विचार, उनके सोचने का तरीका और दिल पर उनकी पकड़ लोगों को हैरान करती है।

प्रिय पाठक! मैं इमाम ग़ज़ाली के बारे में ज़्यादा नहीं लिखना चाहता, जिनका दिमाग बहुत तेज़ था, क्योंकि आप उनके बारे में सारी जानकारी इंटरनेट पर आसानी से पा सकते हैं। ज़रूरी बात यह है कि उनके विचारों को ज़्यादा लोगों तक पहुँचाया जाए।

इस किताब का हिंदी ट्रांसलेशन पेश करके, मैं महान इस्लामी विचारक, जाने-माने विद्वान और कानून के जानकार इमाम ग़ज़ाली के कुछ विचार भारत के लोगों तक पहुँचाना चाहता हूँ।

हर कोई अपनी सोच, नैतिक मूल्यों, लाइफस्टाइल, उन्हें मिले मौकों की लिमिट और दूसरी चीज़ों के हिसाब से ज़रूरी चीज़ें ढूँढ सकता है। भगवान जिसे चाहे रास्ता दिखा सकते हैं, और किसी को भी गुमराह भी कर सकते हैं। अपने छोटे साइज़ के बावजूद, यह किताब बहुत बड़ा बोझ उठाती है। मेरा मानना है कि दुनिया की समझ के बारे में यह किताब सभी लोगों के फायदे के लिए है।

इस किताब को हिंदी में पब्लिश करने में मदद करने के लिए भगवान का शुक्रिया।

सादर,

समीर बाबायेव

प्रस्तावना

उस अल्लाह की प्रशंसा है जिसने अपनी नेमत को मुकर्रबीन (निकटवर्ती) के लिए जन्नत के बाग़ों में बसाया, इस नेमत को विशेष रूप से तफ़क्कुर (चिंतन) करने वालों में बख़्शी, अपनी मख़्लूक़ात (सृष्टि) पर तफ़क्कुर को हक़ीक़त की तलाश करने वाले बंदों के दिलों में यक़ीन (दृढ़ विश्वास) की जड़ें मज़बूत करने का ज़रिया बनाया, इस ज़रिये से बंदों को अपने सिफ़ात (गुणों) के साथ अपनी पहचान करने का मौक़ा दिया, यह अवसर प्रदान किया कि उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं है इस पर दिल से ईमान लाएँ, और तफ़क्कुर करने वाले बंदों को अपनी अज़मत (महानता) और जलाल (प्रताप) दिखाकर वह तंज़ीह (पवित्रता) के लायक़ है।

निस्संदेह वह हर हाल में आदिल (न्यायकारी) है, और तफ़क्कुर करने वाले बंदे देखकर और उसके दलीलों से वाक़िफ़ होकर इस बात के गवाह हैं। मुतफ़क्किर (चिंतनशील) लोग जानते हैं कि वह हिकमत (ज्ञान) वाला, अनंत ताक़त और इल्म (ज्ञान) वाला है:

"अल्लाह ने न्याय को क़ायम करके (अपने दलीलों से) यह बात स्पष्ट कर दी है कि उसके सिवा कोई माबूद नहीं है। फ़रिश्ते और इल्म वाले भी (इसे क़बूल कर चुके हैं। हाँ) क़ादिर (सर्वशक्तिमान) और हकीम (तत्वदर्शी) अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है।" (आल-ए इमरान, 18)

अल्लाह सुब्हानहु व तआला को जानने के लिए, रचना में मौजूद अजूबों को देखना, मख़्लूक़ात की ख़ल्क़त (सृष्टि) की हिकमतों को समझना ज़रूरी है। दिल में यक़ीन को मज़बूत करने का यही तरीक़ा है।

इसी नुक्ता (बिंदु) से सोचने वाले इंसानों के लिए, मैंने इस किताब को लिखा है जो कुरान की आयतों द्वारा इशारा किए गए सृष्टि के कई हिकमतों को बयान करती है।

अल्लाह सुब्हानहु व तआला ने अक़्ल (बुद्धि) की नेमत अता की, उसे वही (इल्हाम) के ज़रिए सही राह दिखाई और अक़्ल वालों को मख़्लूक़ात पर तफ़क्कुर करने और इबरत (सबक) लेने का हुक्म दिया:

“कह दो: ‘आसमानों और ज़मीन में क्या-क्या है, देखो (और इबरत हासिल करो!)’” (यूनुस, 101)

“क्या उन्होंने यह नहीं देखा कि हमने हर जानदार चीज़ को पानी से पैदा किया है? फिर भी क्या वे ईमान नहीं लाएँगे?” (अंबिया, 30)

हर सलीम अक़्ल (स्वस्थ बुद्धि) वाले इंसान द्वारा समझे जाने वाले स्पष्ट दलीलों को जानना, अल्लाह सुब्हानहु व तआला के बंदों से वादा किए गए ख़ूबसूरत चीज़ों और आदत को हासिल करने का रास्ता है जो मारिफ़तुल्लाह (अल्लाह की पहचान) को मज़बूत करता है।

मैंने किताब को अध्यायों में बाँटा है। हर अध्याय में, उसमें गुज़रने वाली मख़्लूक़ात की ख़ल्क़त की हिकमतों का ज़िक्र किया है। मगर ये हिकमतें हमारी समझ की हद तक सीमित हैं। वरना सारे इंसान मिलकर भी अगर मख़्लूक़ात को एक-एक कर गिनकर उनकी सारी ख़ल्क़त की हिकमतों को बयान करने की कोशिश करें तो इसमें कामयाब नहीं हो सकते।

हमारी समझ उतनी ही है जितना अल्लाह सुब्हानहु व तआला ने हमें बताया है।

हमारी दुआ है कि वह अपनी रहमत और करम से इस किताब को फ़ायदेमंद बनाए।

इमाम ग़ज़ाली

आसमानी और समग्र रूप से आलम (ब्रह्मांड) का तफ़क्कुर

अल्लाह सुब्हानहु व तआला फ़रमाता है:

“क्या वे अपने ऊपर वाले आसमान की तरफ़ नहीं देखते कि हमने उसे कैसे बनाया और कैसे सजाया है! उसमें कोई दरार भी नहीं है।” (काफ़, 6)

“अल्लाह वह है जिसने सात आसमान बनाए और ज़मीन से भी उतने ही। उसका हुक्म इनके बीच से उतरता रहता है ताकि तुम जान लो कि अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है और हर चीज़ को अपने इल्म से घेरे हुए है।” (तलाक़, 12)

जब तुम इस आलम पर तफ़क्कुर करते हो तो देखोगे कि यह उस घर की तरह है जिसमें ज़रूरी सारे घरेलू सामान मौजूद हैं; आसमान छत की तरह ऊँचा है, ज़मीन बिछौने की तरह फैली हुई है, सितारे चिराग़ की तरह ठीक जगह पर रखे गए हैं, खनिज खज़ाने की तरह छिपे हुए हैं, और ये सब अपने मक़सद के मुताबिक इस्तेमाल के लिए तैयार किए गए हैं।

इंसान इस आलम में उस घर के मालिक की तरह है जिसे हर चीज़ को इस्तेमाल करने का अधिकार हासिल है। हज़ारों किस्म के पेड़-पौधे उसके इस्तेमाल के लिए तैयार हैं, जानवर उसकी ख़िदमत में लगे हुए हैं।

आसमान बनाया गया है, आँखों को भाने वाले रंग और टोन से रंगा गया है। अगर आसमान नुक़सानदेह रोशनी की किरणों से भरा होता तो आँखों को सुकून की बजाय नुक़सान पहुँचाता। मगर नीला रंग क्या ही ख़ूबसूरत रंग है...

जब इंसान आसमान की तरफ़ देखता है तो अनंत तक फैली उसकी चौड़ाई देखकर उसका दिल खुश हो जाता है। जब आसमान में चाँद और सितारे चमकते हैं तो पैदा होने वाला नज़ारा इंसान को एक अलग ही रूहानी हालत में पहुँचा देता है।

बादशाह लोग अपने दरबार में मौजूद लोगों को देखकर सुकून और लुत्फ़ हासिल कर सकें इसलिए अपने ठिकाने की छत को नक़्क़ाशी और कारीगरी से, कीमती जवाहरात से सजाते हैं। मगर बार-बार देखने पर कुछ वक़्त बाद ये चीज़ें पहली नज़र में मिलने वाले लुत्फ़ को नहीं देतीं, बल्कि उकताहट पैदा करती हैं। हालाँकि क्या आसमान ऐसा है? रोज़मर्रा की ज़िंदगी की परेशानियाँ जब बर्दाश्त से बाहर हो जाती हैं तो यह शख़्स चाहे बादशाह ही क्यों न हो, आसमान की तरफ़ देखकर उसकी हैरतअंगेज़ चौड़ाई और रंगों की भरमार देखकर बड़ी राहत महसूस करता है।

आसमान सितारों और चाँद की ख़ूबसूरती से सजाया गया है। चाँद के साथ-साथ ग्रह भी चलते-फिरते हैं। ग्रहों को देखकर दिशाओं का पता लगाया जाता है। आसमान से पूरब और पश्चिम की तरफ़ देखे जाने वाले रास्ते मौजूद हैं।

कहा जाता है कि ग्रह सितारों के झुंडों से बने हैं। रास्ता भटका हुआ शख़्स उन्हें देखकर अपना रास्ता पाता है। "*उस आसमान की क़सम जिसमें रास्ते हैं*..." (ज़ारियात, 7) आयत में इशारा इन्हीं ग्रहों की तरफ़ है।

ये सारे आसमानी अज्साम (पिंड) साफ़ तौर पर उस ख़ालिक़ की तरफ़ इशारा करते हैं जो जो चाहे पैदा करने पर क़ादिर है, उसके अनंत इल्म को दिखाते हैं।

अनंत ताक़त, इल्म और इरादे वाला अल्लाह कितना बुलंद है!

कहा जाता है कि आसमान की तरफ़ देखने के दस फ़ायदे हैं: ग़म को हल्का करता है, वसवसा (शक) को कम करता है, डर के एहसास को दूर करता है, अल्लाह सुब्हानहु व तआला की याद दिलाता है, दिल में अल्लाह सुब्हानहु व तआला की अज़मत जगाता है, बुरे ख़्यालात को दूर करता है, तंगी में आराम देता है, इश्क़ के दर्द में तसल्ली देता है, मुहब्बत करने वालों को तसल्ली देता है और यह दुआ करने वालों की क़िब्ला है।

सूरज की ख़ल्क़त में मौजूद हिकमतें

“उनमें चाँद को एक नूर (रोशनी) बनाया और सूरज को एक चिराग़ बना दिया।” (नूह, 16) [5]

"(वहाँ) हमने एक जलता हुआ दीपक बनाया।" (नबा, 13)

निस्संदेह सूर्य की रचना अनेक हिकमतों पर आधारित है। हमारी समझ में आने वाली कुछ हिकमतें ये हैं: सूर्य की गति से रात और दिन बनते हैं। यदि रात और दिन न होते तो दुनिया और आखिरत से संबंधित कार्यों का समय ज्ञात नहीं होता, सब कुछ उलझ जाता। सूर्य न होता तो सर्वत्र घोर अंधकार छाया रहता और मनुष्य काम न कर पाते, अपनी आजीविका न कमा पाते। प्रकाश न होता तो जीवन का आनंद ही न होता। सूर्य का प्रकाश न होता तो हमारी आँखों का कोई अर्थ न रह जाता, रंगों में भेद करना संभव न होता।

दूसरी ओर यदि सूर्य कभी अस्त न होता, तो मनुष्यों को विश्राम की आवश्यकता होने के बावजूद आराम न मिल पाता, दिन में उन्हें अपनी ऊर्जा पुनः प्राप्त न होती। दिन चढ़ने के साथ ही लोग नई ऊर्जा के साथ

5 कुरआन-ए-करीम में सूर्य के संबंध में अन्य कुछ आयतें: "रात और दिन, सूर्य और चंद्रमा उसकी निशानियों में से हैं।" "नियमित गति वाले सूर्य और चंद्रमा को हमने तुम्हारे लाभ के लिए बनाया; रात और दिन को भी तुम्हारे उपयोग के लिए दिया।" "जिस आकाश को तुम देख रहे हो उसे बिना स्तंभों के ऊँचा उठाने वाला, फिर अर्श पर विराजमान होने

वाला, सूर्य और चंद्रमा को अपने आदेश के अधीन करने वाला अल्लाह ही है। (ये सभी) एक निर्धारित समय तक चलते रहते हैं। वह तुम्हारे रब से मिलने के विश्वास के लिए हर कार्य को व्यवस्थित करता और निशानियों को स्पष्ट करता है।"

अपने कार्यों में लग जाते, शरीर पर भारी पड़ने वाले कामों को फिर से शुरू कर पाते। यदि रात का अंधकार न छाया होता, तो हिंसक जानवर शिकार की लालसा में सतत गति और शिकार की खोज में रहते।

हर दिन दोहराए जाने वाले सूर्योदय के बाद सूर्यास्त से धरती, उस पर के जीव और पेड़-पौधे सूर्य की तपिश से साँस लेने का अवसर पाते हैं, जलकर नष्ट नहीं हो जाते।

सूर्य प्रदान किए गए प्रकाश के मामले में घर के दीपक के समान है; इसके प्रकाश से आसपास दिखाई देता है, जाने का मार्ग स्पष्ट होता है। इसी प्रकार अपनी गर्मी से सूर्य, भोजन पकाने के लिए जलाए गए चूल्हे के समान है; इसकी आग से भोजन पकाए जाने के बाद दूसरा उससे लाभ उठाता है।

सूर्य सदैव प्रकाश और अंधकार को साथ लेकर धरतीवासियों की सेवा में है; यद्यपि प्रकाश और अंधकार दो शाश्वत शत्रु जैसे हैं, फिर भी दोनों ही संसार के हित में सहयोगपूर्वक कार्य करते हैं। इस बिंदु की ओर संकेत करते हुए अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) कुरआन-ए-करीम में फरमाता है:

"(ऐ रसूल!) कहो: क्या तुमने कभी सोचा, यदि अल्लाह क़यामत के दिन तक रात को लगातार बनाए रखे, तो अल्लाह के अलावा तुम्हें प्रकाश देने वाला दूसरा इलाह कौन है? क्या तुम सुनोगे नहीं? कहो: बताओ तो, यदि अल्लाह क़यामत के दिन तक दिन को लगातार बनाए रखे, तो अल्लाह के अलावा तुम्हें विश्राम के लिए रात देने वाला दूसरा इलाह कौन है? क्या तुम देखोगे नहीं?" (क़सस, 71-72)

सूर्य के निकट आने-दूर जाने से ऋतुएँ बनती हैं; पेड़-पौधे फिर से हरे-भरे होते हैं, जानवर सूखे प्रदेशों से हरे-भरे क्षेत्रों की ओर प्रवास कर अपना जीवन चलाते हैं।

फिर पृथ्वी के सूर्य की कक्षा में घूमने से वर्ष बनते हैं।

सूर्य, अपने रचयिता द्वारा निर्धारित एक स्थान से प्रतिदिन उदित होता है, फिर दूसरे स्थान से अस्त होता है। यदि सूर्य उदय-अस्त न होता तो रात-दिन न बनते, समय का ज्ञान न होता। लगातार अंधकार रहता तो सारी सृष्टि नष्ट हो जाती।

अल्लाह ने रात को दिन पर एक आवरण, विश्राम का समय और दिन को आजीविका कमाने का समय बनाया है। [6] रात दिन में और दिन रात में विलीन हो जाते हैं, एक निश्चित गणना के अनुसार धीरे-धीरे बढ़ते और घटते हैं। [7]

सूर्य के मुख को थोड़ा घुमाने से ऋतुएँ बनती हैं। आकाश के मध्य से थोड़ा हटने पर मौसम ठंडा होता है, शीत ऋतु आती है, जब पूरी तरह मध्य में आ जाता है तो मौसम गर्म होता है, ग्रीष्म ऋतु शुरू होती है। सूर्य जब बीच में रहता है, तो शीतल दिन आते हैं। इस प्रकार, ऋतुओं के क्रमिक आगमन से सभी जीवों के लिए जीवन परिवर्तनशील रूप में चलता रहता है।

शीत ऋतु में, वृक्षों और पौधों के शरीर में ताप परिवर्तन, फलों और फसलों के उत्पन्न होने के लिए आधार तैयार करता है। आकाश

6 "हमने रात को एक आवरण बनाया। दिन को कमाई का समय बनाया। तुम्हारे ऊपर सात मजबूत आकाश बनाए।" (नबा, 10-12)

7 "अल्लाह रात को दिन में और दिन को रात में समा देता है; सूर्य और चंद्रमा को अपने आदेश के अधीन कर दिया है। प्रत्येक एक निर्धारित समय तक चलता रहता है। यही (सब करने वाला) तुम्हारा रब अल्लाह है। राज्य उसी का है। उसे छोड़कर जिनकी तुम पूजा करते हो, वे तो एक खजूर के छिलके के भी मालिक नहीं।" (फातिर, 13) (रात का दिन में और दिन का रात में समा जाना, रात का दिन का और दिन का रात का स्थान लेना है। दूसरे शब्दों में, एक के घटने से दूसरे का बढ़ना है। सूर्य और चंद्रमा का निर्धारित समय तक चलते रहना, अपनी कक्षाओं में क़यामत तक घूमते रहना या सूर्य का एक वर्ष में और चंद्रमा का एक मास में अपना चक्कर पूरा करना है।)

"रात और दिन के बदलने में (बढ़ने-घटने में) और अल्लाह के आकाशों तथा धरती में बनाई हुई चीजों में, (उसके इनकार से) बचने वाली कौम के लिए निश्चय ही अनेक निशानियाँ हैं!" (यूनुस, 6)

बादलों से घिर जाता है, वर्षा होती है, प्रकृति कठोर हो जाती है, जीवों के शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है।

वसंत ऋतु में, प्रकृति में एक नवजीवन दिखाई देता है; पौधे हरे-भरे होते हैं, वृक्ष फूलों से लद जाते हैं, जानवर अपनी प्रवृत्ति से अपनी संतानों की निरंतरता के लिए संभोग की ओर

प्रवृत्त होते हैं।

ग्रीष्म ऋतु में, शीत और वसंत के बीत जाने से विश्रांत हुई हवा फलों के पकने का कारण बनती है।पृथ्वी अपशिष्टों से मुक्त होकर सूखने लगती है।

शरद ऋतु में हवाओं के प्रभाव से वातावरण शुद्ध हो जाता है, गर्मियों में पैदा हुए कीटाणु नष्ट हो जाते हैं, रातें लंबी हो जाती हैं। यह समय बुआई और रोपण के लिए उपयुक्त हो जाता है।

ऋतुओं के असंख्य ऐसे सौंदर्य हैं जिन्हें हम गिन नहीं सकते। निस्संदेह, ये सभी परिवर्तन एकाएक नहीं होते जिससे जीवों को झटका लगे, बल्कि ऋतुओं के बीच संक्रमण समय के साथ बहुत कोमलता से घटित होता है।

ये सभी घटनाएँ असीम ज्ञान और बुद्धिमत्ता के स्वामी अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) के दिव्य नियम के निर्दोष संचालन को प्रदर्शित करती हैं।

जैसा कि हमने ऊपर बताया, पृथ्वी सूर्य की कक्षा में घूमती है। इस घूर्णन काल में चार ऋतुएँ क्रमिक रूप से आती हैं, एक वर्ष बनता है। इस प्रकार घटनाओं के समय को सही ढंग से निर्धारित किया जा सकता है।

सूर्योदय भी बुद्धिमत्ता से परे नहीं है। यदि सूर्य निरंतर उदय के स्थान पर ही रुका रहता, तो केवल पृथ्वी का वह पक्ष प्रकाशित होता जबकि अन्य भाग, पहाड़ों और अन्य प्राकृतिक ऊँचाइयों के अवरोध के कारण सूर्य के प्रकाश से लाभान्वित नहीं हो पाते। किंतु सूर्य, भोर के समय पूर्व से

उदय होकर पश्चिम की ओर बढ़ता है और सबको प्रकाशित करता है, इस प्रकार सूर्य के प्रकाश से वंचित कोई स्थान नहीं रह जाता।

रात और दिन की अवधि भी अत्यंत उत्तम ढंग से निर्धारित की गई है। यदि ये अधिक लंबे या छोटे होते तो सभी जीव इस स्थिति से नकारात्मक रूप से प्रभावित होते; जब तक दिन का प्रकाश रहता, पशु शांत नहीं होते, अपने घरों में छिपने नहीं जाते, हिंसक जीव लगातार शिकार की खोज में भटककर नष्ट हो जाते, पौधे लगातार सूर्य के प्रकाश के संपर्क में आकर जलकर सूख जाते। इसी प्रकार यदि रातें आवश्यकता से अधिक लंबी होतीं, तो जीव रात की सुस्ती से उबर नहीं पाते, उनकी गतिशीलता सीमित हो जाती और वे अपनी आवश्यकता के अनुसार भोजन प्राप्त करने में कठिनाई अनुभव करते, जैसे सूर्य का

प्रकाश न पाने वाले पौधे अपनी प्राकृतिक गर्मी खोकर, नमी के प्रभाव से सड़ने-गलने लगते। [8]

---

8 सूर्य 10 लाख किलोमीटर व्यास का, पृथ्वी से 100 गुना बड़ा एक खगोलीय पिंड है। सूर्य की सतह का तापमान 6000 डिग्री है। केंद्र की ओर यह तापमान बढ़कर 2 करोड़ डिग्री तक पहुँच जाता है। सूर्य के केंद्र का तापमान इतना अधिक होने का कारण उस पर पड़ने वाला उच्च दबाव और बहुत दूर तक फैलने वाले सूर्य की सतह पर गैसीय विस्फोट हैं। इन विस्फोटों में से कुछ को सौर कलंक कहा जाता है। ये सूर्य पर उत्पन्न होने वाले प्रचंड अग्नि-भंवर हैं। इन भंवरों का व्यास 50 हजार किलोमीटर तक हो सकता है।

चंद्रमा और तारों की रचना में निहित बुद्धिमत्ता

"वह अल्लाह महान है जिसने आकाश में राशियाँ बनाईं और उनमें एक दीपक (सूर्य) एवं प्रकाशमान चंद्रमा स्थापित किया।" (फुरक़ान, 61)

अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) ने दिन की गर्मी को हल्का करने और जीवों के विश्राम के लिए रात की रचना की किंतु उसे पूर्णतः अंधकारमय नहीं बनाया। अन्यथा रात के समय कोई कार्य संभव नहीं होता। जबकि कुछ लोगों को रात में काम करना पड़ता है, कुछ को दिन के अधूरे कार्यों को रात्रि में पूरा करना होता है। कभी-कभी दिन बहुत अधिक गर्म होने पर कार्यों को रात की शीतलता के लिए छोड़ दिया जाता है। यहीं चंद्रमा का प्रकाश काम आता है जो रात्रि में आवश्यक प्रकाश प्रदान करता है। साथ ही, अल्लाह की दया के प्रतीक के रूप में, चंद्रमा पृथ्वी को सूर्य की भाँति इतना प्रकाशित और तप्त नहीं करता कि मनुष्य दिन का अनुभव करें और शांत होकर विश्राम न कर सकें, जिससे उनका स्वास्थ्य खतरे में न पड़े।

अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) ने तारों को भी कुछ प्रकाश दिया है ताकि जब चंद्रमा अंधकारमय हो तो तारों के प्रकाश से लाभ उठाया जा सके।

तारे आकाश के आभूषण भी हैं, पृथ्वीवासियों के लिए सुकून के स्रोत, जिन्हें देखने की आदत उन्हें हो चुकी है।

क्या यह अद्भुत व्यवस्था नहीं? आवश्यकता के अनुसार अंधकार के राज्य की अनुमति देते हुए, बीच-बीच में

तारे टिमटिमाते हैं, इस प्रकार पूर्ण रात्रि होने पर भी आवश्यक प्रकाश से वंचित नहीं रहना पड़ता।

फिर चंद्रमा के द्वारा महीने और वर्षों का ज्ञान होता है। चंद्रमा का अस्तित्व स्पष्ट रूप से अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) की एक कृपा है। [9]

तारों को देखकर बुआई, खेती आदि कार्यों का उचित समय जाना जाता है, स्थल और जल यात्राओं में दिशा निर्धारित की जाती है, रात के गहन अंधकार में सुनसान स्थानों पर मार्ग मिलता है, मौसम का अनुमान लगाया जाता है। तारों की उपस्थिति भयावह अंधकार के प्रभाव को कम करती है:

"वही तो है जिसने तुम्हारे लिए तारे बनाए ताकि तुम स्थल और समुद्र के अंधकारों में उनके द्वारा मार्ग पा सको। हमने ज्ञानी समुदाय के लिए अपनी निशानियाँ विस्तार से बयान कर दी हैं।" (अन'आम, 97)

इसके अलावा, चमकीले खगोलीय पिंडों का आकाश में लटका हुआ अवस्थित होना मनुष्य में सुखद भावनाएँ जगाता है।

चंद्रमा का प्रकट होना, ओझल होना, घटना-बढ़ना, प्रकाशित करना, ग्रहण लगना - ये सभी रचयिता की सामर्थ्य को प्रदर्शित करते हैं।

पृथ्वी रात और दिन के साथ अन्य खगोलीय पिंडों के साथ अपनी धुरी पर तीव्र गति से घूमती है। हम भी इस घूर्णन के साक्षी हैं। यदि पृथ्वी इतनी तेजी से न घूमती तो 24 घंटे जैसे संक्षिप्त समय में इतनी दूरी तय नहीं कर पाती। किंतु हम इस

9 *"वही है जिसने सूर्य को दीप्तिमान और चंद्रमा को प्रकाशमान बनाया तथा वर्षों की संख्या और गणना जानने के लिए उसके लिए मंज़िलें निर्धारित कीं। अल्लाह ने इसे सिर्फ सत्य के आधार पर ही पैदा किया है। वह ज्ञानी लोगों के लिए अपनी आयतें खोलकर बयान करता है।"* (यूनुस, 5)

"हमने रात और दिन को निशानी के तौर पर पैदा किया। फिर हमने रात के अंधेरे को मिटाकर दिन के उजाले को ला खड़ा किया ताकि तुम अपने रब के फ़ज़ल (अनुग्रह) को

तलाश करो और ताकि तुम वर्षों की गिनती और हिसाब जान सको। "हमने हर चीज़ को स्पष्ट तरीके से समझा दिया है।" (इस्रा, 12)

हमें इस घूर्णन का कोई अहसास नहीं होता। वरना, हमारी आँखें इस घूर्णन को सहन नहीं कर पातीं, और हम शारीरिक संतुलन खो बैठते।

इसी तरह, प्लीएड्स तारक समूह, ओरायन तारामंडल, सीरियस (आकाश-तारा) जैसे कुछ खगोलीय पिंड अलग-अलग समय पर दिखाई देते और गायब हो जाते हैं। यदि ये सभी खगोलीय पिंड एक साथ दिखाई दें और फिर एक साथ ही गायब हो जाएँ, तो लोग विभिन्न घटनाओं के समय का निर्धारण करने में इनका सही उपयोग नहीं कर पाएँगे। दूसरी ओर, बिग डिपर तारामंडल को साल भर देखा जा सकता है, जिससे लोग जमीन और समुद्र में इसके अनुसार दिशा का निर्धारण कर सकते हैं।

यदि खगोलीय पिंड अपने स्थान पर स्थिर रहें और अपनी कक्षाओं में परिभ्रमण न करें, तो उन्हें देखकर कोई अर्थ निकालना संभव नहीं होगा। इसके विपरीत, यदि वे सभी एक साथ चलें, तो उनकी अपनी कोई विशिष्ट कक्षा नहीं होगी, वे कहाँ और कितना घूमते हैं यह पता नहीं चल पाएगा, और दिनों, महीनों, वर्षों और ऋतुओं का ज्ञान नहीं हो पाएगा।

ब्रह्मांड में खगोलीय पिंडों को एक निश्चित कक्षा निर्धारित की गई है, और लाखों वर्षों से उनकी कक्षाओं में कोई विचलन नहीं देखा गया है। यदि इन कक्षाओं में कोई परिवर्तन या विचलन होता, तो पृथ्वी इससे नकारात्मक रूप से प्रभावित होती। आखिरकार, पृथ्वी सूर्य मंडल का एक हिस्सा है। इस स्थिति को सुधारने के लिए मनुष्य कुछ भी नहीं कर सकता था। लेकिन अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) की शक्ति से ब्रह्मांड की प्रणाली अरबों वर्षों से घड़ी की तरह चल रही है।

पृथ्वी की रचना में निहित हिकमत (बुद्धिमता)

"और धरती को हमने बिछाया, तो हम क्या ही अच्छे बिछाने वाले हैं!" (ज़ारियात, 48)

"हमने आकाश, पृथ्वी और इन दोनों के बीच की सभी चीज़ों को खेल-तमाशा बनाकर नहीं बनाया।" (अंबिया, 16)

पृथ्वी को इस प्रकार फैलाया और बिछाया गया है ताकि इस पर रहने वाले जीव आराम से रह सकें।

पृथ्वी पर रहने वाले जीवों को जीवित रहने के लिए भोजन की आवश्यकता होती है। इसीलिए पृथ्वी का लगभग संपूर्ण भाग जीवों की आवश्यकता के पौधों के उगने के लिए अनुकूल है। पृथ्वी जीवों को ठंड और गर्मी से सुरक्षा प्रदान करने वाला एक आश्रय स्थल है। साथ ही, *"क्या हमने धरती को जीवों और मृतकों के लिए एकत्रित होने का स्थान नहीं बनाया?"* (मुरसलात, 25-26) [10] इस आयत में व्यक्त किया गया है कि पृथ्वी को ढकने वाली मिट्टी की परत, मनुष्य को परेशान करने वाले सड़े-गले पदार्थों, कचरे और शवों को ढककर पर्यावरण में फैलने वाली बुरी गंध को रोकती है।

पृथ्वी पर, मनुष्यों और अन्य जीवों के विभिन्न उद्देश्यों और अपने जीवन को जीने तथा अपनी संतान को आगे बढ़ाने के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्रवास करने के लिए

[10] आयत से निम्न अर्थ निकलता है: पृथ्वी की सतह जीवित प्राणियों के लिए है, जबकि इसका अंदरूनी हिस्सा मृतकों के लिए एकत्रित होने का स्थान है।

यह सब संभव बना दिया गया है, ताकि वे अपनी इच्छानुसार किसी स्थान को निवास बना सकें या कुछ समय के लिए ठहर सकें:

"फिर उसने धरती को बिछाया, उसमें से पानी और चारा निकाला, और पहाड़ों को मज़बूती से स्थापित किया। यह तुम्हारे और तुम्हारे पशुओं के उपयोग के लिए है।" (नाज़िआत, 30-33)

यदि धरती लगातार हिलती-डुलती रहती, तो मनुष्य काम न कर पाते, खेती-बाड़ी में व्यस्त न रह पाते, सुखपूर्वक जीवन व्यतीत न कर पाते। इस स्थिति को समझने के लिए, हम उन भूकंपों पर विचार कर सकते हैं जो अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) के डर से, पापों और अवज्ञा से बचने के लिए कभी-कभी आते हैं।

पृथ्वी एक निश्चित तापमान और शुष्कता पर है। यदि यह शुष्कता अत्यधिक होती और पूरी पृथ्वी कठोर पत्थरों से ढकी होती, तो जीवों के लिए आवश्यक भोजन मिट्टी में न उग पाता, खेती संभव न होती, और भवन निर्माण नहीं किया जा सकता था। इसीलिए धरती को एक ऐसा ग्रह बनाया गया है जिसकी सतह कोमल है।

पृथ्वी पूरी तरह समतल नहीं है बल्कि उसमें ऊँच-नीच है। इस प्रकार बारिश का पानी ऊँचे क्षेत्रों से नीचे की ओर बहता है, वहाँ की मिट्टी को सिंचित करता है और अंततः

समुद्रों में जा मिलता है। यदि ऐसा न होता, तो वर्षा का जल एक ही स्थान पर जमा हो जाता, बाढ़ आ जाती, मार्ग अवरुद्ध हो जाते, और लोग अपने कार्य नहीं कर पाते।

फिर पृथ्वी सोना, चाँदी, माणिक, पन्ना जैसे बहुमूल्य रत्नों और लोहा, इस्पात, जस्ता, संगमरमर, सीसा, चूना तथा असंख्य अन्य प्रकार के औद्योगिक खनिजों से

भरपूर है। अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) ने ये सभी खनिज मनुष्यों को धरती को और सुंदर बनाने के लिए प्रदान किए हैं।

घर बनाने, बोने और जोतने के लिए मिट्टी को पहाड़ों के विपरीत नम और नरम बनाया गया है। यदि यह कठोर होती, तो बीज मिट्टी में न लगाए जा सकते थे, और उन्हें पर्याप्त जल नहीं मिल पाता। नरम मिट्टी में लगे पौधे बढ़ते समय हिल-डुल सकते हैं, और मिट्टी से अपना पोषण तथा जल प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रकार अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) मिट्टी के भीतर दाएँ-बाएँ फैलने वाली जड़ें उत्पन्न करता है, ताकि पौधे और वृक्ष स्थिर रह सकें। कभी-कभी ज़मीन के ऊपर की शाखाओं जितनी ही जड़ें ज़मीन के नीचे मौजूद होती हैं।

फिर जहाँ आवश्यकता हो वहाँ मिट्टी द्वारा कुआँ खोदने की संभावना का होना अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) की एक कृपा है। क्योंकि यदि यह संभावना केवल पहाड़ों में ही होती, तो जल प्राप्त करना एक कठिन कार्य होता।

मिट्टी को मार्ग बनाने, चलने-फिरने और वाहनों से यात्रा करने के लिए उपयुक्त बनाया गया है। अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) इस स्थिति की ओर संकेत करते हुए पवित्र कुरआन में फरमाता है:

"वही है जिसने तुम्हारे लिए धरती को आज्ञाकारी बनाया। अतः इसकी सतह पर चलो-फिरो और अल्लाह के रोज़ी में से खाओ। उसी की ओर लौटना है।" (मुल्क, 15)

"हमने धरती में पहाड़ स्थापित किए ताकि वह उन्हें हिला न दे। और हमने उसमें विस्तृत मार्ग बना दिए ताकि वे अपने उद्देश्य तक पहुँच सकें।" (अंबिया, 31)

फिर मिट्टी ईंट, कच्ची ईंट जैसे मकान निर्माण सामग्री और बर्तन जैसे घरेलू उपकरण बनाने के लिए उपयुक्त कोमलता वाली है। इसके अतिरिक्त नमक, फिटकरी,

बोरैक्स और गंधक जैसे पदार्थ अधिकतर कठोर एवं शुष्क क्षेत्रों में नहीं बल्कि नरम और नम मिट्टी में पाए जाते हैं। अनेक प्रकार के पौधे नम मिट्टी में उगते हैं, क्योंकि घोंसला बनाना सरल होता है, इसलिए मिट्टी के अंदर रहने वाले जीव नरम मिट्टी को पसंद करते हैं।

जैसा कि हमने पहले बताया, मिट्टी के नीचे खनिजों की उपस्थिति अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) की एक कृपा है। अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) हज़रत सुलेमान (अलैहिस्सलाम) को इस आयत के द्वारा यह बात याद दिलाते हैं:

"...और हमने उनके लिए पिघले हुए ताँबे को स्रोत से नदी की तरह बहाया..." (सबा, 12)

इस आयत में अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) की कृपा से हज़रत सुलेमान (अलैहिस्सलाम) द्वारा ताँबे के भंडार को खोजने और आसानी से उपयोग में लाने की ओर संकेत किया गया है।

इसी प्रकार अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) अपने बंदों को संबोधित करते हुए फरमाते हैं:

"...और हमने लोहे को भी उतारा जिसमें भारी शक्ति और लोगों के लिए अनेक लाभ हैं..." (हदीद, 25) यहाँ 'उतारने' से अर्थ 'पैदा करने' से है।

अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) ने मिट्टी के नीचे सोने-चाँदी जैसे बहुमूल्य खनिजों की उपस्थिति से मनुष्यों को अवगत कराया, मनुष्यों ने इन खनिजों को निकालकर अपनी आजीविका चलाई, काँच जैसी सामग्रियों से बर्तन बनाए, अपने भोजन और पेय पदार्थों को इन बर्तनों में सुरक्षित रखा। यदि ये खनिज न होते तो जीवन और अधिक कठिन हो जाता।

पहाड़ों की रचना में भी अनेक हिकमतें (प्रज्ञापूर्ण उद्देश्य) निहित हैं। अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) फरमाते हैं:

"उसने पहाड़ों को मजबूती से स्थापित किया।" (नाज़िआत, 32)

"तुम्हें हिलाने के लिए धरती में मजबूत पहाड़ बनाए और रास्ता पाने के लिए नदियाँ और रास्ते बनाए।" (नह्ल, 15)

"हमने आकाश से नाप-तोल कर पानी बरसाया फिर उसे धरती में ठहरा दिया..."
(मोमिनून, 18)

अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) धरती को हरा-भरा करने तथा मनुष्यों एवं अन्य जीवों के जीवनयापन के लिए आकाश से वर्षा कराते हैं। यदि पहाड़ न होते तो हवा और तापमान के प्रभाव से आकाश से गिरा वर्षा का जल नरम मिट्टी की गहराई में समा जाता। ऐसी स्थिति में मीठे पानी तक पहुँचने के लिए गहरे कुएँ खोदने पड़ते। किंतु पहाड़ों के कारण आकाश से गिरा वर्षा का जल एकत्र होने योग्य स्थानों पर इकट्ठा होता है, फिर स्रोत के रूप में निकलता है और वहाँ से नदियों एवं समुद्रों तक पहुँचता है। मनुष्य बाँध बनाकर पानी की कमी के समय इससे लाभ उठाते हैं। साथ ही पहाड़ों की चोटियों पर जमी बर्फ बहुत समय तक टिकी रहती है। फिर मौसम के गर्म होने पर यह पिघलकर बस्तियों की ओर बहती है और लोग इस बहते हुए बर्फ के पानी से लाभान्वित होते हैं।

पहाड़ों पर केवल ऊँचाई वाले स्थानों में पाए जाने वाले और कुछ रोगों के उपचार में प्रयुक्त होने वाले पौधे उगते हैं। पहाड़ों पर विशाल तने वाले वृक्षों के जंगल होते हैं। इन वृक्षों से जहाज़ बनाए जाते हैं, घरों का निर्माण किया जाता है।

पहाड़ों के बीच में खेती के योग्य घाटियाँ पाई जाती हैं। इन मैदानों में मधुमक्खी पालन किया जाता है, साथ ही पशुओं के लिए चरागाह उपलब्ध रहते हैं और कुछ हिंसक पशु भी इन इलाकों में रहते हैं।

मनुष्य पहाड़ों को काटकर घर बनाते तथा मृतकों को दफ़नाने के लिए क़ब्रिस्तान तैयार करते हैं:

"वे पहाड़ों को काट-काटकर अपने लिए सुरक्षित घर बनाते थे।" (हिज्र, 82)

पहाड़ों को देखकर यात्रा के दौरान जाने की दिशा निर्धारित की जाती है। युद्ध के समय पहाड़ी क्षेत्रों में शरण लेकर शत्रुओं के आक्रमण से सुरक्षित रहा जाता है।

अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) ने अपने विशाल ज्ञान और उदारता के बावजूद सोना-चाँदी जैसे मूल्यवान खनिजों को पानी की तरह प्रचुर मात्रा में पैदा नहीं किया, न ही सहज उपलब्ध बनाया। इस प्रकार इन बहुमूल्य खनिजों तक सबकी पहुँच अवरुद्ध रही। निस्संदेह यह स्थिति भी अनेक हिकमतों (प्रज्ञापूर्ण उद्देश्यों) पर आधारित है:

"हर चीज़ के भंडार हमारे पास ही हैं। हम उसे एक निर्धारित मात्रा में ही उतारते हैं।" (हिज्र, 21)

समुद्रों की रचना में निहित हिकमतें

"वही है जिसने तुम्हारे वश में कर दिया समुद्र को, ताकि तुम उससे ताज़ा मांस (मछली) खाओ और उसमें से शृंगार की वस्तु (मोती) निकालो। तुम देखते हो कि जहाज़ समुद्र में (पानी को) चीरते हुए चलते हैं। ये सब उसका अनुग्रह ढूँढ़ने और उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए है।" (नह्ल, 14)

अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) ने असंख्य लाभों से भरे समुद्रों को विस्तृत रूप में बनाया, स्थल भागों को समुद्रों से घेरा। यह ऐसा है कि जहाँ विशाल पर्वत शृंखलाएँ खड़ी हैं, धरती पर उन स्थलों का विस्तार समुद्रों की तुलना में समुद्र के बीच के छोटे से टापू के बराबर है। समुद्र में रहने वाले जीवों की संख्या भी थलचर प्राणियों की अपेक्षा काफ़ी अधिक है। थल पर निवास करने वाले जीवों, अद्वितीय प्राकृतिक सौंदर्य को हम देख रहे हैं। समुद्र की गहराइयों में भी तरह-तरह के जीव, मूल्यवान खनिज और विविध प्राकृतिक सुंदरताएँ विद्यमान हैं। गहरे पानी में इतने विशाल जीव मौजूद हैं कि जब वे सतह पर आते हैं तो मानो कोई छोटी पहाड़ी या भूमि का टुकड़ा प्रतीत होते हैं।

थल पर रहने वाले मनुष्य के अतिरिक्त, पक्षी, घोड़ा, गाय आदि प्राणियों के समान और संख्यात्मक दृष्टि से कहीं अधिक प्रजातियाँ समुद्र में भी पाई जाती हैं। कुछ प्रजातियाँ, ज्ञात प्राणियों से बिल्कुल भिन्न होती हैं। यह सभी प्राणी अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) की कृपा से अपना जीवन यापन कर रहे हैं। इन जीव प्रजातियों का वर्णन करने बैठें तो पूरी-पूरी पुस्तकें भर जाएँगी।

गहरे पानी में, कुछ कवचधारी जीवों के भीतर मोती बनते हैं, चट्टानों में मूँगे पाए जाते हैं। इन्हीं नेमतों की याद दिलाते हुए अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) फरमाते हैं:

"दोनों समुद्रों से मोती और मूँगा निकलता है।" (रहमान, 22)

कुरआन में वर्णित मूँगे से, और अधिक बारीक बनावट वाले मोतियों की ओर संकेत किया गया है। फिर कहा गया है:

"फिर तुम दोनों अपने रब की किस-किस नेमत को झुठलाओगे?" (रहमान, 23)

समुद्रों में विशाल आकार और भार वाले जहाज़ चलते हैं। इन जहाज़ों से यातायात की सुविधा मिलती है, व्यापारिक वस्तुओं की ढुलाई होती है।जहाजों का पानी की सतह पर चलना अल्लाह की कुदरत का एक प्रमाण है:

"निस्संदेह आकाशों और धरती की रचना में, रात और दिन के एक के बाद एक आने में, लोगों के लिए उपयोगी वस्तुओं से लदे हुए समुद्र में तैरते जहाजों में, अल्लाह के आकाश से उतारे हुए और मृत धरती को जीवित करने वाले जल में, धरती पर हर प्रकार के जीवों को फैलाने में, हवाओं और आकाश व धरती के बीच आज्ञाकारी बादलों को नियंत्रित करने में विचारशील समुदाय के लिए (अल्लाह के अस्तित्व और एकत्व को सिद्ध करने वाले) अनेक निशानियाँ हैं।" (बक़रा, 164)

यदि जहाज न होते तो मनुष्य महाद्वीपों के बीच यात्रा न कर पाते, टनों भार के मालों का परिवहन न कर पाते। अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) ने लोगों का कार्य सरल बनाना चाहा, इसलिए जहाज निर्माण के लिए उपयुक्त वृक्ष बनाए और लोगों को इन वृक्षों से जहाज कैसे बनाएँ यह प्रेरणा दी। फिर पर्याप्त हवाएँ भेजीं, और नाविकों को हवाओं के चलने का समय व दिशा बताई ताकि वे समुद्र में यात्रा कर सकें।

जिस पानी पर जहाज चलते हैं, वह एक पतला प्रवाही द्रव है। इसकी पतलाई और प्रवाही होने के कारण जहाज विशाल लहरें काटते हुए असीम समुद्रों में आगे बढ़ते हैं।

इन सभी नेमतों को और अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) के बंदों पर अपने अनुग्रह को कुछ लोगों का अनदेखा करना आश्चर्यजनक स्थिति है। जबकि ये सभी चीजें अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) की हिकमत, कुदरत और महानता की ओर स्पष्ट रूप से इशारा करते हुए कहती हैं: "क्या तुम मेरी विशेषताओं, अंगों, बदलती प्रकृति और लाभों को नहीं देखते? कोई भी समझदार व्यक्ति कैसे सोच सकता है कि मैं स्वयं अस्तित्व में आया या प्रकृति जैसी निर्जीव वस्तु ने मुझे बनाया? जबकि मुझे अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) ने बनाया है।"

जल की रचना में निहित हिकमतें

"क्या इनकार करने वालों ने यह नहीं देखा कि आकाश और धरती जब जुड़े हुए थे तो हमने उन्हें अलग कर दिया और हर जीवित चीज को जल से बनाया? फिर भी क्या ये ईमान नहीं लाएँगे?" (अंबिया, 30)

"(क्या वे बेहतर हैं) या वह जिसने आकाशों और धरती को बनाया, आकाश से तुम्हारे लिए जल उतारा? उस जल से हमने सुंदर बाग़ उगाए जिनके एक पेड़ को भी तुम उगाने में सक्षम नहीं हो। क्या अल्लाह के अलावा कोई और पूज्य है? वास्तव में वे भटकाव में जारी एक शोरगुल हैं।" (नम्ल, 60)

मीठे जल का अस्तित्व मनुष्य के लिए कितना बड़ा वरदान है। पृथ्वी पर सभी जीवों का जीवन इस जल पर निर्भर है। आवश्यकता का एक घूँट जल, इंसान को उसकी कई प्रिय वस्तुओं से दूर कर सकता है। परंतु मनुष्य इस तरह की महान नेमत से अनजान है।

अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) ने इतनी आवश्यक वस्तु को अपने बंदों को प्रचुर मात्रा में दिया है। यदि मीठा जल प्राप्त करना अत्यंत कठिन होता तो मानवता सदैव कठिनाई में रहती, जल का प्रबंध जीवन संघर्ष बन जाता।

जल एक पतला, सूक्ष्म मिश्रण है। बादलों से धरती पर आता है, मिट्टी में समाकर उसे शुद्ध करता है। पौधों की जड़ों को पोषण देता है। फिर सूर्य के प्रभाव से वाष्पित होकर पौधों और वृक्षों के शीर्ष भागों की ओर बढ़ता है।

जीवों द्वारा मुख से ग्रहण किए गए भोजन को पचाने और व्यर्थ भागों को शरीर से बाहर निकालने के लिए जल की आवश्यकता होती है, इसलिए अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) ने उसे एक सुहावना स्वाद प्रदान किया है। प्यास लगने पर पिया गया जल अत्यंत स्वादिष्ट लगता है और मनुष्य को तरोताजा कर देता है।

जल मनुष्य के शरीर और उसके वस्त्रों व सामान को स्वच्छ करने के काम आता है।

मिट्टी को जल से गीला करके कीचड़ बनाया जाता है, जिससे भवन, मृदभांड आदि निर्माण के लिए उपयुक्त बनाया जाता है।

शुष्क अवस्था में उपयोग न हो पाने वाले खाद्य पदार्थों को जल से गीला करके खाने योग्य बनाया जाता है। इसी प्रकार जल से गाढ़े पेय को पतला करके पिया जाता है।

जल, चारों ओर खतरा फैलाती आग को बुझाने के काम आता है। इस प्रकार संभावित क्षति और जानमाल की हानि को रोका जाता है।

जल से स्नान करके थकान दूर की जाती है। भोजन जल से बनाया जाता है। अनेक खाद्य पदार्थों के उपभोग में जल की महत्वपूर्ण भूमिका है।

जल के और भी अनेक लाभ हैं जिनका हमने उल्लेख नहीं किया।

इतने जीवनोपयोगी वरदान को प्रचुर मात्रा में उपलब्ध कराया गया है, सरलता से प्राप्त किया जा सकता है। परंतु, दुर्भाग्य से इसकी कद्र नहीं की जाती। यदि पीने का जल समाप्त हो जाए, तो धरती रहने योग्य न रह जाए।

निस्संदेह अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) ने धरती पर जल बनाकर और सरलता से उपलब्ध कराकर, सभी जीवों के लिए धरती को निवास योग्य ग्रह बनाया है।

जल की रचना में निहित हिकमतें गिनने से समाप्त नहीं होतीं। यह नेमत देने वाला अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) कितना महान है!

वायु की रचना में निहित हिकमतें

"हमने हवाओं को परागण करने वाला बनाकर भेजा और आकाश से जल उतारा ताकि तुम्हारी जल की आवश्यकता पूरी करें। (यदि हम ऐसा न करते) तो तुम उसे (पर्याप्त) जल संचित न कर पाते।" (हिज्र, 22) [11]

हम जिस वायु में श्वास लेते हैं, उसमें कुछ हवा का झोंका होता है। यदि ऐसा न होता तो धरती पर रहने वाले जीव जीवित न रह पाते। वायु का श्वास लेने से शरीर का तापमान संतुलित रहता है। वायु, जीवों के लिए जल जितनी ही महत्वपूर्ण है। जब जीव श्वास नहीं ले पाते तो उनके शरीर का ताप उनके हृदय को प्रभावित करता है और यह स्थिति उनकी मृत्यु का कारण बनती है।

वायु से उड़ते बादल, जल की आवश्यकता वाले क्षेत्रों में जल ले जाते हैं। यदि वायु न होती, तो बादल अपने स्थान से हिल न पाते और अन्य क्षेत्र वर्षा से वंचित रह जाते।

जहाज वायु की शक्ति से एक महाद्वीप से दूसरे महाद्वीप जाकर वहाँ न होने वाले उत्पादों को ले जाते हैं। यदि वायु न होती,

11 आयत में कहा गया है कि हवा को परागण करने वाला बनाकर भेजा गया है, जिसकी पुष्टि आज विज्ञान करता है कि वर्षा होने में हवा की बड़ी भूमिका है; साथ ही पौधों पर बहते समय उनके नर बीजों को मादा बीजों पर टिकाकर उनका परागण करती है।इस आयत में

यह भी बताया गया है कि आकाश से बरसने वाला पानी धरती की परतों में जमा होता है और इन्हीं स्रोतों से मानवता की ज़रूरतों को पूरा किया जाता है।

कृषि उत्पाद सिर्फ उन्हीं स्थानों पर सीमित रह जाते, अन्य लोग इन उत्पादों से लाभ नहीं उठा पाते।

हवा में गतिशीलता का गुण है और यह पूरी धरती में फैलने की क्षमता रखती है। हवा के संचरण से धरती शुद्ध होती है और विभिन्न बीमारियों को जन्म देने वाले जीवाणु, कीटाणु नष्ट हो जाते हैं।

हवा के साथ उपयोगी पोषक तत्वों से भरे धूल कण और रेत खेती योग्य बागानों की ओर बह जाते हैं, इन बहकर आए मिट्टी के कारण पेड़ ज़मीन में और मजबूती से जड़ें जमा पाते हैं। इसी तरह हवा के प्रभाव से उड़कर आने वाली मिट्टी भी पहाड़ी ढलानों को ढक लेती है। इस तरह ये क्षेत्र कृषि के अनुकूल बन जाते हैं। हवा के प्रभाव से कुछ समुद्री उत्पाद तट पर आ जाते हैं। लोग भी इन उत्पादों को आसानी से प्राप्त कर लेते हैं।

इसी तरह हवा के प्रभाव से बारिश धरती पर एक साथ बाढ़ की तरह न गिरकर बूंद-बूंद करके गिरती है। फिर धरती पर गिरने वाले बारिश के कण इकट्ठा होकर नदियों, समुद्रों को निरापद तरीके से बनाते हैं। इस तरह लोग बारिश से सर्वोत्तम तरीके से लाभ उठाते हैं।

फिर अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) की दया और बरकत से धरती पर बरसने वाली यह वर्षा, जैसा कि आयत में बताया गया है, सभी जीवों के लिए जीवन का स्रोत है:

"आकाश से पानी बरसाने वाला वही है। उसमें तुम्हारे पीने के लिए (स्रोत) है और तुम्हारे चरागाहों के लिए (पेड़-पौधे)। (अल्लाह) पानी के द्वारा तुम्हारे लिए अनाज, जैतून, खजूर, अंगूर और अन्य सभी प्रकार के फल उगाता है। निःसंदेह इनमें विवेकशील समुदाय के लिए एक बड़ी सीख है।" (अन-नहल, 10-11)

कुछ समय वर्षा होने के बाद मौसम साफ हो जाता है, जीव सांस ले पाते हैं। यदि लगातार कई दिनों तक वर्षा होती रहे, तो पौधों व जीवों को नुकसान पहुँचता है; हरियाली, फल और सब्जियाँ सड़ने लगती हैं, घर, इमारतें

ढह जाती हैं, सड़कें बंद हो जाती हैं, लोग अपने काम पर नहीं जा पाते। इसके विपरीत स्थिति में, यदि मौसम लगातार साफ ही रहे, धरती पर वर्षा न हो, तो सूखा पड़ जाता है,

मिट्टी और पौधे सूख जाते हैं, स्रोतों और घाटियों का पानी सूखने लगता है, हवा रूखी होकर नमी रहित हो जाती है, जिससे महामारी फैलती है, पशुओं को चरागाह नसीब नहीं होता, मधुमक्खियाँ शहद बनाने के लिए फूल नहीं पातीं और इन सबका परिणाम होता है कि मंहगाई बढ़ जाती है।

जब हवा कभी बरसाती होती है, कभी साफ, तो धरती पर संतुलन बनता है और एक के कारण हुए नुकसान की भरपाई दूसरा कर देता है। इस तरह दुनिया पर एक सामान्य जीवन जीना संभव होता है। निस्संदेह यह एक सामान्य स्थिति है। कभी-कभी यह संतुलन बिगड़ा हुआ भी देखा जाता है। इस प्रकार, एक नेमत के अस्तित्व के बाद उसकी अनुपस्थिति भी दिखाकर लोग नेमत की कद्र समझते हैं, अत्याचार और नाफरमानी से दूर रहने की आवश्यकता को समझ जाते हैं। क्योंकि शारीरिक रूप से कमजोर पड़ा, बीमार हुआ व्यक्ति, अपने इलाज में सहायक होने वाले खाद्य पदार्थों और दवाओं की तलाश में लग जाता है, बुराई करने का अवसर नहीं पाता:

"अगर अल्लाह अपने बन्दों को रोज़ी खुलकर देता तो वे धरती में ज़्यादती करने लगते। परन्तु वह जिस मात्रा में चाहता है (रोज़ी) उतारता है। निस्संदेह वह अपने बन्दों की ख़बर रखने वाला, (उन्हें) देखने वाला है।" (शूरा, 27)

आग की रचना में निहित हिकमतें

"अब तुम मुझे बताओ कि जिस आग को तुम सुलगाते हो, क्या उसके लकड़ी को तुमने पैदा किया है या हम ही उसके पैदा करने वाले हैं? हमने उसे एक निशानी और बियाबान में आने-जाने वालों के लाभ के लिए पैदा किया है। अतः तुम अपने महान रब के नाम की तस्बीह करो।" (वाक़िआ, 71-74)

इंसान को प्रदान की गई सबसे महत्वपूर्ण नेमतों में से एक आग है। हालांकि आग खतरनाक भी है, इसलिए अल्लाह (स.व.) ने इसे जरूरत पड़ने पर ही इस्तेमाल किया जा सके इस तरह पैदा किया है, बिना सोचे-समझे हर समय हर जगह मौजूद होने की इजाजत नहीं दी है। आग कुछ पदार्थों में छिपी हुई है।

आग के अनेक फायदे हैं। इन्हें हम इस प्रकार संक्षेप में बता सकते हैं:

आग से भोजन पकाया जाता है, पेय पदार्थ तैयार और उबाले जाते हैं। आग न होती तो ठोस और तरल खाद्य पदार्थ खाने लायक न बन पाते, पेय पदार्थ घुलकर मिश्रित न हो

पाते। आग में न उबाले गए भोजन का पाचन संभव न होता।

फिर सोना, चांदी, तांबा, लोहा और सीसा जैसे पदार्थों को पिघलाने में आग की आवश्यकता होती है। आग न होती तो इन धातुओं से लाभ न उठाया जा सकता। तांबा आग में पिघलाया जाता है और उससे बर्तन बनाए जाते हैं। जैसा कि अल्लाह (स.व.) ने इस आयत के माध्यम से तांबे को शुक्रिया के लायक एक नेमत बताया है:

"वे सुलेमान के लिए किलों, मूर्तियों, हौज़ों जितने (बड़े) तश्तरियों, मज़बूत कड़ाहों में से जो कुछ वह चाहता था, बना देते थे।

ऐ दाऊद के परिवार वालो! शुक्र अदा करो। मेरे बन्दों में से शुक्र करने वाले कम ही हैं!" (सबा, 13)

लोहे को आग में पिघलाकर तलवार और कवच जैसे युद्ध उपकरण बनाए जाते हैं। अल्लाह (स.व.) इस स्थिति को इस प्रकार बताता है:

"और हमने लोहे को भी उतारा जिसमें बड़ी ताकत है और लोगों के लिए फायदे हैं।" (हदीद, 25)

"हमने उसे (दाऊद को) तुम्हारे लिए कवच बनाना सिखाया ताकि युद्ध की मुसीबतों से तुम्हारी रक्षा करे। फिर क्या तुम शुक्र अदा करोगे?" (अंबिया, 80)

आग में पिघलाए गए लोहे से कृषि उपकरण, कुल्हाड़ी, हथौड़ा, छेनी जैसे निर्माण सामग्री, लकड़ी के काम में प्रयुक्त होने वाले गर्मी सहने वाले उपकरण बनाए जाते हैं।

यदि अल्लाह (स.व.) ने मानवता को आग जैसी बड़ी नेमत प्रदान न की होती तो इस प्रकार के उपकरण न बन पाते, लोग सोने और चांदी से मुद्रा और आभूषण न बना पाते और ये धातुएं मिट्टी की तरह बेकार हो जातीं।

जब रात का गहरा अंधेरा छा जाता है तो आग जलाई जाती है, आग की लौ से आसपास रोशन हो जाता है। इस रोशनी में भोजन किया जाता है, रोगियों की देखभाल की जाती है, आसपास हानिकारक हो सकने वाली चीजों को पहचाना जाता है, बिस्तर तैयार किए जाते हैं। इस प्रकार मानो सूरज कभी अस्त ही न हुआ हो, रोशनी द्वारा दिए गए सुकून में लोग चैन से अपने काम करते हैं और आराम करते हैं।इसके अलावा आग से जमने के खतरे को रोका जाता है, ठंडी हवाओं की तीव्रता कम हो जाती है।

युद्ध के समय अभेद्य दुर्गों को आग से नष्ट करके विजय प्राप्त की जाती है।

लोग जब चाहें आग जलाकर उपयोग करते हैं, जब चाहें अपने साथ ले जाते हैं।

मानवता की सेवा में दी गई यह आग कितना बड़ा वरदान है!

मनुष्य के सृष्टि में निहित हिकमतें

"निस्संदेह हमने मनुष्य को मिट्टी के सार (से निकाले हुए) एक तत्व से उत्पन्न किया। फिर हमने उसे एक मजबूत स्थान (गर्भाशय) में बूंद (वीर्य) बना दिया। फिर हमने बूंद को जमा हुआ खून (भ्रूण) बनाया। फिर हमने जमे हुए खून को मांस का लोथड़ा बनाया; फिर हमने उस मांस के लोथड़े को हड्डियों (कंकाल) में बदल दिया; फिर हमने उन हड्डियों को मांस से ढक दिया। फिर हमने उसे दूसरी सृष्टि (आत्मा फूंककर) में मनुष्य बना दिया। तो सर्वोत्तम सृष्टिकर्ता अल्लाह कितना महान है! फिर निश्चित ही तुम इसके बाद मरने वाले हो। फिर तुम निस्संदेह क़यामत के दिन पुनर्जीवित किए जाओगे।" (मु'मिनून, 12-16)

अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) ने मनुष्य को रचा, मनुष्य पृथ्वी पर फैलकर बढ़े, और कुछ परीक्षाओं व परख से गुज़रे।

अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) ने मनुष्यों को नर और मादा के रूप में उत्पन्न किया। फिर उनके दिलों में प्रेम के बीज डाले, उन्हें विपरीत लिंग के प्रति आकर्षक बनाया। इस आकर्षण के सामने मनुष्य असहाय होकर, अपनी फ़ितरत के अनुसार अपने भीतर महसूस की जाने वाली कामुक इच्छाओं के प्रभाव में विपरीत लिंग के निकट पहुंचा। यौन इच्छा से निकटता के दौरान, यौन अंग सक्रिय होकर पीठ और छाती के बीच एकत्र तरल को भ्रूण के निर्माण स्थान गर्भाशय में छोड़ देता है। इस प्रकार शुक्राणुओं को ले जाने वाला तरल उस स्थान से मादा के गर्भ तक पहुंच जाता है जहां वह एकत्र हुआ था।

शुक्राणु एक ऐसी संरचना है जो आसानी से नष्ट हो सकती है। हालांकि इतना नाजुक होने के बावजूद, पिता से माता के गर्भ तक

पहुंचाए गए ये शुक्राणु अपनी संरचना नहीं खोते, अपने मूल रूप में संरक्षित रहते हैं। फिर अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) ने इस तरल से नर और मादा उत्पन्न किए; तरल खून के थक्के में, थक्का मांस के टुकड़े में, मांस का टुकड़ा हड्डी में बदल गया, हड्डी मांस से

ढक गई, मांस नसों और मांसपेशियों से मजबूत हुआ, रक्त वाहिकाओं से गुथा हुआ। फिर अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) ने अंगों को बनाया, एक गोल सिर बनाया, इस सिर पर आंख, कान, नाक और मुंह उत्पन्न किए।

अल्लाह ने आंख को देखने की क्षमता प्रदान की। आंख का अपने आसपास की वस्तुओं को देख पाना एक ऐसी घटना है जिसका वर्णन करना कठिन है, आश्चर्यजनक है। आंख सात परतों से बनी होती है। प्रत्येक परत की एक विशेष संरचना और कार्य होता है। यदि ये परतों में से कोई एक क्षतिग्रस्त हो जाए तो आँख अपनी देखने की क्षमता खो देती है। आँख, धूल आदि हानिकारक पदार्थों से पलकों द्वारा सुरक्षित रहती है जो बहुत तेजी से खुल और बंद हो सकती हैं। पलकें ऐसे द्वार के समान हैं जो आवश्यकता पड़ने पर खुल जाती हैं और अन्य समय में बंद रहती हैं।

पलकें आँख और चेहरे को सुंदरता भी प्रदान करती हैं, उन पर बनी पलकें (लैशेज़) न तो इतनी लंबी होती हैं कि आँख को नुकसान पहुँचाएं और न ही इतनी छोटी कि बदसूरत लगें। वे बिल्कुल उचित लंबाई की होती हैं।

आँसू में थोड़ा नमक होता है ताकि आँख में प्रवेश करने वाले हानिकारक पदार्थों का प्रभाव कम हो सके। आँख के कोने ऐसे बनाए गए हैं कि आँख में घुसी हानिकारक वस्तुएँ आँसुओं के साथ बाहर की ओर बह जाएँ। भौहें आँखों के लिए पर्दे का काम करती हैं और चेहरे को सुंदरता भी प्रदान करती हैं। पलकों की तरह ही भौहों की लंबाई भी बिल्कुल उचित होती है।

बालों और दाढ़ी-मूँछों को लंबा छोड़ा जा सकता है या छोटा भी किया जा सकता है। इस प्रकार, व्यक्ति अपने आप को जैसा अधिक सुंदर अनुभव करता है,

वह शरीयत के दायरे में रहकर अपने बालों और दाढ़ी को इच्छानुसार लंबा या छोटा कर सकता है।

अब मुँह और जीभ की संरचना देखें। होठों को मुँह का आवरण बनाया गया है। यह ठीक दरवाज़े की तरह है; ज़रूरत पड़ने पर खुलता है। होंठ मसूड़ों और दाँतों को ढकते हैं। वे चेहरे को सुंदरता प्रदान करते हैं। यदि होंठ न होते तो मनुष्य का चेहरा बहुत भद्दा लगता। मनुष्य अपने होंठों और जीभ की सहायता से बोल सकता है, अपने विचार दूसरों तक पहुँचा सकता है। फिर जीभ से मुँह में डाले गए निवाले को घुमाता है, दाँतों के बीच ले जाता है और उसे चबाता है। इस प्रकार वह अपने निवालों को आसानी से निगल लेता है।

दाँत एक नहीं बल्कि अलग-अलग बनाए गए हैं। इस तरह यदि मनुष्य के कुछ दाँत गिर जाएँ तो वह दूसरों का उपयोग जारी रख सकता है। दाँत अपने लाभकारी गुणों के साथ-साथ मुँह को सुंदरता भी प्रदान करते हैं। अन्य हड्डियों की तुलना में दाँत अधिक मजबूत होने के लिए बहुत सख्त बनाए गए हैं। चबाते समय दाढ़ों की अधिक आवश्यकता होती है, इसलिए दाढ़ बड़े होते हैं और अन्य दाँतों की तुलना में अधिक होते हैं। क्योंकि चबाना पाचन की पहली कड़ी है। सामने के सीधे कटने वाले दाँत और रदनक (कैनाइन) दाँत भोजन को काटने के काम आते हैं। यही कारण है कि इनकी जड़ें अधिक मजबूत और शीर्ष अधिक तेज़ बनाए गए हैं। साथ ही इन दाँतों द्वारा मुँह को दी गई सुंदरता अलग ही है। इसलिए इनका रंग थोड़ा अधिक सफेद, लंबाई बराबर और संरेखण ठीक मोतियों की माला जैसा होता है।

मुँह में ज़रूरत पड़ने पर बढ़ने वाला लार का द्रव होता है। यदि यह द्रव हर स्थिति में दिखाई दे और मुँह से बाहर बहने लगे तो मुँह बहुत बदसूरत लगेगा। लेकिन यह द्रव, जब मुँह में भोजन का अंश प्रविष्ट होता है तो बढ़ जाता है और उसे गीला करके निगलने में आसानी प्रदान करता है। भोजन को गीला करने के लिए बनाया गया यह द्रव जब मुँह में खाद्य नहीं होता तो लुप्त हो जाता है, केवल

गले, जीभ और मुँह को गीला रखने भर की नमी बचती है। क्योंकि मुँह का सूखापन बोलने में बाधा डालता है और विभिन्न बीमारियों का कारण बनता है।

मनुष्य अपनी जीभ और मुँह के कुछ भागों से भोजन का स्वाद प्राप्त करता है। इस तरह खाने-पीने की आवश्यकता होने पर वह जो पसंद करे, वही खाता है और जो पसंद न हो, उससे दूर रहता है। फिर इस स्वाद लेने की क्षमता से भोजन के गर्म और ठंडेपन की तीव्रता तय करता है।

मनुष्य के कान में कड़वा सा नमीयुक्त पदार्थ होता है।इस प्रकार हानिकारक कीड़ों और कानों की ओर बढ़ने वाले जीवों से सुरक्षा होती है। कान घुमावदार आकार में बनाए गए हैं। इस तरह यह आसपास की आवाज़ों को एकत्र करता है और इन ध्वनियों को समझने योग्य बनाने के लिए मस्तिष्क तक पहुँचाता है।

कान, जो उसमें प्रवेश करने वाले कीटों और अन्य वस्तुओं को पहचाना जा सके, इसलिए अत्यंत संवेदनशील बनाया गया है। फिर कान, यदि उसमें कोई कीड़ा या वस्तु घुस जाए तो वह अधिक हिल-डुल सके, तुरंत अंदर न पहुँच जाए, इसलिए घुमावदार बनाया गया है।

इस तरह मनुष्य इसे सोते समय भी महसूस कर लेता है और उसी के अनुसार सावधानी बरतता है।

मनुष्य हवा के नाक में प्रवेश करने से आसपास की गंधों को पहचानता है। यह अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) के सिवा किसी के समझ से बाहर की घटना है।

नाक को ऊपर की ओर बनाकर अधिक सुंदर दिखने का प्रबंध किया गया है। नाक में दो छिद्र होते हैं। इन छिद्रों में खाए-पिए जाने वाले पदार्थों की गंध को महसूस किया जा सके, सुगंधों का आनंद लिया जा सके, दुर्गंध से बचा जा सके, इसलिए गंध लेने की इंद्रियाँ लगाई गई हैं। इसके अलावा नाक के छिद्रों से वुज़ू के समय अंदर पानी खींचा जाता है, इस तरह मनुष्य को एक सुकून मिलता है।

मनुष्य का गला आवाज़ों के निकलने के अनुकूल बनाया गया है। बोलते समय जीभ हिलती है, इस तरह विभिन्न अक्षर निकलते हैं।

गले की संरचना संकरापन, चौड़ाई, मोटाई, पतलापन, कठोरता, मुलायमता, लंबाई और छोटाई के अनुसार भिन्नता दिखाती है। इसकी संरचना में इन परिवर्तनों के अनुसार गले से निकलने वाली आवाज़ें भी बदलती हैं। जैसे कि दो मनुष्य एक-दूसरे से मेल नहीं खाते, वैसे ही दो आवाज़ें भी मेल नहीं खातीं। यहाँ तक कि आवाज़ों से लोगों को पहचानना संभव है। निस्संदेह मनुष्यों का आकार-प्रकार में भिन्न-भिन्न बनाया जाना एक-दूसरे को पहचानने की प्रवृत्ति के हिकमत पर आधारित है। अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) ने हज़रत आदम और हज़रत हव्वा को अलग-अलग सूरतों में बनाया, फिर उनकी संतानें भी विभिन्न सूरतों में दुनिया में आईं और यह सिलसिला इसी तरह चलता रहा।

ज़रूरत के काम कर सके, बुरी और हानिकारक चीज़ों को स्वयं से दूर रख सके, इसलिए मनुष्य को दो हाथ दिए गए हैं। हथेली को कुछ चौड़ा बनाया गया है, संवेदनशील उंगलियों के सिरों से सुसज्जित किया गया है। अंगूठा एक तरफ होता है जबकि अन्य उंगलियाँ दूसरी तरफ। इस तरह अंगूठे से अन्य सभी उंगलियों तक पहुँचा जा सकता है।

सारी मानवता एकत्र होकर उंगलियों को वर्तमान स्वरूप से अधिक सुंदर ढंग से डिज़ाइन करने का प्रयास करे तो इसमें सफल नहीं हो सकती। उंगलियाँ, अंगूठा एक अलग तरफ, उंगलियाँ अलग-अलग लंबाई की और एक ही कतार में डिज़ाइन की गई हैं। इस तरह वस्तुओं को पकड़ना और छोड़ना संभव होता है। हथेली खुली हो तो, मानो थाली की तरह उस पर कुछ रखा जा सकता है। मुट्ठी बंद हो तो कठोर औज़ार बन जाती है। उंगलियाँ

आधी बंद हो तो हाथ कलछुल बन जाता है, हथेली खोलकर उंगलियाँ जोड़ दी जाएँ तो कुदाल बन जाती है।

उंगलियों के सिरों पर एक ओर जो उन्हें सजाते हैं, दूसरी ओर अधिक मजबूत बनाने के लिए उन्हें पीछे से सहारा देते हैं

नाखून होते हैं। उंगलियों से पकड़ में न आने वाली पतली वस्तुएँ, नाखूनों से पकड़ी जाती हैं।

शरीर के छोटे से हिस्से नाखून न हों तो, थोड़ी सी खुजली होने पर मनुष्य क्या करे, समझ नहीं पाता, यहाँ तक कि अपनी खुजली भी दूर नहीं कर पाता। क्योंकि न हड्डी जितने कठोर न त्वचा जितने मुलायम स्वभाव के साथ, बढ़ाए-घटाए जा सकने वाले नाखून सोते समय भी इस काम के लिए सर्वोत्तम साधन हैं। नहीं तो सोते समय मनुष्य का कोई स्थान खुजलाए तो किसी और को ढूँढ़कर उससे सहायता माँगनी पड़ती।

फिर प्रारंभिक सृष्टि एक निरर्थक तरल से आरंभ होती है, यह तरल समय के साथ हड्डी में बदल जाता है। कठोर और शक्तिशाली संरचना वाली हड्डियाँ शरीर को सीधा और संतुलित खड़ा रहने देती हैं। हड्डियाँ लंबी, छोटी, गोल, सपाट, बीच में खोखली, पतली और मोटी हो सकती हैं। हड्डियों के भीतर शरीर के लिए आवश्यक एक तरल पदार्थ होता है।

मनुष्य अपने संपूर्ण शरीर और अंगों का उपयोग करता है। लेकिन शरीर के जिन अंगों की आवश्यकता हो उन्हें अलग-अलग प्रयोग कर सके इसलिए एक ही हड्डी से नहीं बनाया गया, बल्कि अनेक हड्डियों से मिलकर बना है और हिलाने-डुलाने में आसानी हो इसलिए हड्डियों के बीच जोड़ बनाए गए हैं। हर अंग की हड्डी उससे अपेक्षित गति के अनुरूप, आवश्यकता के अनुसार बनाई गई है, जोड़ों से संधियाँ बनाई गई हैं और ये स्थान नसों से मजबूत किए गए हैं। संधि स्थानों पर हड्डियों का एक सिरा उभरा हुआ होता है जबकि दूसरा सिरा खोखला होता है। इस तरह हड्डियाँ एक-दूसरे से जुड़ती हैं और इस प्रकार मनुष्य चाहे तो शरीर के किसी अन्य भाग को हिलाए बिना सिर्फ एक विशिष्ट अंग को हिला सकता है। हड्डियों में संधि स्थान न हों तो यह संभव न होता।

मनुष्य का सिर 55 हड्डियों से बना होता है जो विभिन्न आकृतियों वाली होती हैं। ये हड्डियाँ, सिर गोल आकार पा सके इस तरह जोड़ी गई हैं। इन हड्डियों में से 6 खोपड़ी

में, 24 ऊपरी जबड़े में, 2 निचले जबड़े में होती हैं। शेष हड्डियाँ, कुछ काटने के लिए तो कुछ चबाने के काम आने वाले दाँतों को बनाती हैं।

गर्दन शारीरिक रूप से सिर और धड़ के बीच स्थित होकर संबंध का कार्य करने वाला शरीर का एक भाग है। गर्दन में एक-दूसरे में घुसे हुए डिस्क नामक 7 उपास्थि होती हैं। गर्दन के निचले भाग से कुब्ज अस्थि तक 24 डिस्क होती हैं। कुब्ज अस्थि को पुच्छ अस्थि से 3 अलग डिस्क जोड़ती हैं। पुच्छ अस्थि में भी 3 डिस्क होती हैं।

फिर पीठ के भाग की हड्डियाँ, छाती, कंधा, हाथ, कमर का भाग, कुब्ज अस्थि, घुटना, पैर और पैर की उंगलियों की हड्डियों से संबंधित होती हैं।

जोड़ों में छोटी हड्डियों को न गिनें तो मनुष्य के शरीर में कुल 248 हड्डियाँ होती हैं। ये सभी निरर्थक, पतला तरल वीर्य से बनाई गई हैं। मनुष्य के शरीर में एक अतिरिक्त हड्डी हो तो मनुष्य बेचैनी महसूस करता है, इस हड्डी को निकालना पड़ता। इसी तरह एक कम हो तो, इस हड्डी की कमी को किसी तरह पूरा करना पड़ता।

मांसपेशियाँ हड्डियों को हिलाने-डुलाने में सहायक ऊतक हैं। मनुष्य के शरीर में 529 मांसपेशियाँ होती हैं।मांसपेशियाँ, मांस, नसें, लिगामेंट्स और झिल्लियों से मिलकर बनी होती हैं। मांसपेशियाँ अपने स्थान के अनुसार विभिन्न आकार और मात्रा में हो सकती हैं। उदाहरण के लिए, आँख और पलकों को हिलाने के लिए 24 मांसपेशियाँ होती हैं।

इस प्रकार हर अंग में अलग संख्या और संरचना की मांसपेशियाँ पाई जाती हैं।

मानव शरीर की नसों और रक्त वाहिकाओं की संरचना और भी जटिल है। इनमें अभी तक पूरी तरह समझ में न आने वाली अद्भुत संरचनाएँ होती हैं।

मनुष्य एक प्रतिष्ठित प्राणी है। इसीलिए उसे विशेष रूप से सृजित किया गया है, सीधे खड़े होने, बैठने और अपनी इच्छानुसार अंगों को हिलाने की क्षमता प्रदान की गई है। यदि वह कुछ अन्य प्राणियों की तरह जमीन पर लेटकर चलने को मजबूर होता तो कोई भी कार्य नहीं कर पाता।

सामान्य तौर पर मनुष्य के आंतरिक और बाह्य संरचना को देखने पर हम चकित होकर पाते हैं कि वह अद्भुत रूप से पूर्णता के साथ सृजित किया गया है। मनुष्य के विकास और जीवन के लिए भोजन आवश्यक है। जन्म से मृत्यु तक उसे निरंतर पोषण की आवश्यकता रहती है। परन्तु अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) ने मनुष्य के खाने की मात्रा को सीमित कर

दिया है, एक निश्चित मात्रा में भोजन करने के बाद उसे तृप्ति का अहसास होता है। अन्यथा मानव शरीर अत्यधिक विशाल हो जाता, हिलने-डुलने और कार्य करने में असमर्थ हो जाता। साथ ही, मनुष्य को यह चुनने की क्षमता दी गई है कि वह क्या खाए, इसके लिए उसे विभिन्न संवेदनाओं और इंद्रियों से सुसज्जित किया गया है। यह अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) की उस पर विशेष दया और अनुग्रह है।

एक बूँद पानी से इस प्रकार के अजूबे रचने वाले अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) की धरती पर और उसके भीतर सूर्य, चाँद तथा तारों से भरे अंतरिक्ष में की गई सृष्टि के चमत्कारों की कल्पना तो आप स्वयं करें। धरती और आकाशों में एक कण के सृजन में भी कोई हिकमत (ज्ञान) की कमी नहीं है। सृष्टि के हर रूप में, केवल अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) ही जानता है कि कितनी हिकमतें छिपी हैं। सारी मखलूकात (सृष्टि) अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) की कुदरत के जीवित साक्षी हैं:

"तुम्हें पैदा करना अधिक कठिन है या आकाश को, जिसे अल्लाह ने बनाया, उसे ऊँचा किया, संतुलित किया, उसकी रातों को अंधकारमय और दिन को प्रकाशमय बनाया? फिर उसने धरती को बिछाया। उससे पानी और चारा निकाला। पहाड़ों को मजबूती से स्थापित किया। तुम्हारे और तुम्हारे पशुओं के लिए उपयोगिता के रूप में।" (नाज़िआत, 27-33)

धरती के सभी मनुष्य और जिन्न एकत्र होकर भी, वीर्य को जीवन देकर उसमें आँख और कान बनाने का प्रयास करें तो सफल नहीं हो सकते। परन्तु अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) ने उसे गर्भाशय में जीवन दिया, आकार प्रदान किया, अंगों का निर्माण किया और सुंदर रूप प्रदान किया।

अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) ने माँ के गर्भ को शिशु के विकास के लिए सर्वोत्तम रूप में सृजित किया है। वहाँ रहते हुए शिशु नहीं रोता, उसे किसी के द्वारा दिलासा दिए जाने की आवश्यकता नहीं होती।वरना, माँ को बच्चे की अधिक देखभाल करनी पड़ती जिससे वह बहुत थक जाती और शायद अपने बच्चे से भी दूर हो जाती।

बच्चा पैदा होता है, उसके अंग माँ के दूध के अलावा अन्य खाद्य पदार्थों को पचाने में सक्षम हो जाते हैं। तभी उसे धीरे-धीरे उसकी ज़रूरत के अनुसार दांत प्राप्त होने लगते हैं।

इंसान बड़ा होने पर और अधिक समझदार होता है, अपने आस-पास की घटनाओं को बेहतर समझने लगता है। शिशु के जन्म के समय समझने और विचार करने की क्षमता

विकसित नहीं होती है। यदि वह जन्म लेते ही किसी व्यस्क की तरह बुद्धि का उपयोग कर पाता, तो अपरिचित वातावरण में आने के कारण जन्म को स्वीकार नहीं कर पाता, हैरान रह जाता। पैदा होने के बाद भी उसे कपड़े में लपेटकर ले जाना, पालने में रखकर झुलाना उसे अजीब लगता। मगर नवजात होने के नाते उसे यह सारा ध्यान चाहिए होता है। बाद में यदि वह लगातार सोचता और अपनी इच्छाओं का विरोध करता, तो उसकी मासूमियत खत्म हो जाती, उसके प्रति लोगों का प्रेम और सहानुभूति कम हो जाती। इस स्थिति में

इंसान का धीरे-धीरे बौद्धिक क्षमताएँ हासिल करना ही बुद्धिमत्ता है। [12]

प्रसव के समय गर्भाशय के मार्ग चौड़े हो जाते हैं। इस तरह बच्चा आसानी से पैदा होता है।

पुरुष का चेहरा महिला से अलग दिखे और बुढ़ापे में उस पर झुर्रियाँ छिप जाएँ, इसलिए उसे दाढ़ी से सुशोभित किया गया है। महिला का चेहरा विपरीत लिंग को आकर्षक लगे, इसलिए बिना बालों का है। इसी आकर्षण से मानव वंश आगे बढ़ता है।

मनुष्य की इस संपूर्ण रचना को देखकर हम समझते हैं कि वह संयोग के भरोसे नहीं छोड़ा गया है। गर्भ में भ्रूण यदि जीवनदायी रक्त वाहिकाओं का सहारा न पाता, तो पानी के बिना सूखे पौधे की तरह मर जाता और अपनी माँ को भी मार देता। पैदा होते ही यदि उसे माँ का दूध न मिलता तो भूख-प्यास से मर जाता। जब वह दूध के अलावा अन्य आहार लेने लायक होता, तो अगर दाँत न निकलते तो भोजन चबा और पचा नहीं पाता। इस प्रकार उसे हमेशा दूध पर निर्भर रहना पड़ता और पोषण की कमी से वह विकसित न हो पाता। यदि युवावस्था में उसकी दाढ़ी न उगती तो वह बच्चों और औरतों जैसा लगता, प्रभावशाली और गरिमामय प्रतीत नहीं होता।

उसे यह सब सुविधाएँ, ठीक उस समय जब उनकी जरूरत होती, केवल वही सृष्टा प्रदान कर सकता था जिसने उसे अस्तित्व में लाया है।

मानव वंश को आगे बढ़ाने के लिए संभोग को दोनों लिंगों के लिए विशेष रूप से आकर्षक बनाया गया है और पुरुष एवं स्त्री को अलग-अलग कार्यक्षम सेक्स अंग प्रदान किए गए हैं।

12 इस संदर्भ में अल्लाह सुब्हानहु तआला का फरमान है: "निश्चय अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर

है।" (सूरः अन-नह्ल, 77)

इंसान को उसकी विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अलग-अलग अंग दिए गए हैं: आँखों से देखना, हाथों से चीज़ों को हिलाना, पैरों से चलना, पेट से खाना पचाना, लिवर से शरीर को साफ करना, मुँह से भोजन लेना और बातें करना, उत्सर्जन अंगों से अपशिष्ट बाहर निकालना - इन सब पर विचार करने से मनुष्य की उत्तम रचना स्पष्ट होती है।

मुँह से खाया गया भोजन पेट में पचकर, उसका सत्व, कठोर पदार्थों से हानि न हो इसलिए छन्नी के काम करने वाली सूक्ष्म धमनियों से होकर यकृत तक पहुँचता है।यकृत तक पहुंचाए गए पोषक तत्व वहां रक्त में परिवर्तित हो जाते हैं और रक्त प्रवाह के लिए उपयुक्त नलिकाओं के माध्यम से पूरे शरीर में फैल जाते हैं। रक्त वाहिकाओं के माध्यम से प्रत्येक अंग को उसकी आवश्यकता के अनुसार पोषण प्राप्त होता है। बाद में, बेकार पदार्थ एक स्थान पर इकट्ठा हो जाते हैं ताकि शरीर में फैलकर बीमारी का कारण न बनें और अंततः बाहर निकाल दिए जाएं।

शरीर में कोई भी अकारण अंग नहीं है। उदाहरण के लिए, आंखें वस्तुओं को देखने और रंगों को पहचानने के लिए बनाई गई हैं। यदि हमारी आंखें न होतीं तो रंगों का कोई अर्थ नहीं होता। इसी प्रकार, आंखों में प्रकाश न हो तो हम देख नहीं सकते। कान ध्वनियों को सुनने के लिए बने हैं। कान न होते तो आवाज़ों का कोई मतलब नहीं होता। अन्य अंग भी इसी प्रकार हैं।

प्रकाश और वायु जैसे कुछ पदार्थ हमें वस्तुओं को अपनी इंद्रियों के माध्यम से समझने में सहायता करते हैं। उदाहरण के लिए, यदि पर्यावरण में प्रकाश न हो तो हम अपने आस-पास की वस्तुओं को नहीं देख सकते। इसी तरह, यदि वायु के माध्यम से ध्वनियां हमारे कानों तक नहीं पहुंचतीं तो हम उन्हें समझ नहीं सकते।

दृष्टि और श्रवण शक्ति खो देने वाला व्यक्ति दैनिक जीवन में अनेक कठिनाइयों का सामना करता है; वह सामने की वस्तुओं को नहीं देख पाता, चलते समय कदम कहां रखना है यह नहीं जान पाता,

रंगों में अंतर नहीं कर पाता, शत्रु या किसी भी प्रकार के खतरे का आभास नहीं कर पाता, अनेक व्यवसाय सीख नहीं पाता। केवल श्रवण शक्ति से वंचित व्यक्ति आमने-सामने की बातचीत और वार्तालाप से वंचित रह जाता है, मधुर ध्वनियों, सुरीले संगीत को नहीं सुन पाता, बातचीत के दौरान सामने वाले को समझने में काफी कठिनाई होती है,

आस-पास घटित होने वाली घटनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त नहीं कर पाता। मानो वह जीवित मृतक हो। बुद्धि का न होना इन सबसे भी अधिक बुरा है।

मनुष्य को अपने अंगों के साथ इतना सक्षम बनाया गया है कि वह अपनी सभी आवश्यकताओं को पूरा कर सके। यदि वह इनमें से किसी एक को खो देता है तो उसका दैनिक जीवन बाधित हो जाता है, जीवन कठिन हो जाता है। अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) कुछ लोगों को एक सामान्य व्यक्ति के पास मौजूद अंगों से वंचित कर देते हैं, ताकि वे समझदार बनें और उन्हें मिले उपहारों की कद्र करें। यदि ये लोग खोई हुई इंद्रिय या अंगों की अनुपस्थिति में सब्र करते हैं तो आखिरत में इसका प्रतिफल पाएंगे। संपत्ति और अभाव में, अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) की दया हमेशा प्रकट होती है।

कुछ अंग जोड़े में बने हैं, कुछ अकेले बने हैं। उदाहरण के लिए, मनुष्य का एक सिर होता है और अनेक संवेदी अंग शरीर के सिर वाले हिस्से में स्थित होते हैं। यदि एक से अधिक सिर होते तो वे अतिरिक्त भार के अलावा किसी काम के नहीं होते। एक बोलता जबकि दूसरा चुप रहता तो दूसरे का कोई उपयोग नहीं होता, यदि दोनों एक साथ बोलते तो एक का बोलना व्यर्थ हो जाता। दूसरी ओर, यदि एक कुछ कहता और दूसरा कुछ और कहता तो सामने वाला व्यक्ति समझ नहीं पाता कि उसका मतलब क्या है।

हाथ जोड़े में बनाए गए हैं। यदि मनुष्य के पास एक हाथ होता तो वह अपने काम नहीं कर पाता। हम यह स्थिति एक हाथ वाले व्यक्तियों में स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। एक हाथ वाला व्यक्ति दो हाथों वाले

व्यक्ति की तरह काम नहीं कर सकता । दो पैरों का होना भी अत्यंत स्पष्ट कारण पर आधारित है।

ध्वनि अंगों पर नज़र डालें तो गला आवाज़ के लिए मार्ग का काम करता है; जीभ, होठ, मुंह और दांत अक्षरों का उच्चारण करने में सहायता करते हैं। जिस व्यक्ति के दांत गिर जाते हैं, उसे बोलने में काफी कठिनाई होती है।

श्वासनली के माध्यम से फेफड़ों तक साफ हवा पहुंचती है। लगातार साफ हवा के फेफड़ों में पहुंचने से हृदय सुचारू रूप से कार्य करता है।

मुंह में डाला गया भोजन जीभ द्वारा मुंह के अंदर घुमाया जाता है। जीभ भोजन और पेय को निगलने में सहायता करती है। इसी तरह दांत भोजन को चबाने में काम आते हैं। दांत

होठों के लिए आधार का काम भी करते हैं।

होठों के माध्यम से प्रवेश करने वाले तरल पदार्थ छन जाते हैं ताकि आमाशय को कोई परेशानी पहुंचाने वाली वस्तु न पहुंचे। होठ मुंह के द्वार का कार्य करते हैं।

जैसा कि देखा गया, प्रत्येक अंग का एक विशिष्ट कार्य और कार्यप्रणाली होती है। यदि हमारे पास इन अंगों से अधिक या कम अंग होते तो शरीर का संतुलन बिगड़ जाता।

मस्तिष्क को देखें तो मस्तिष्क को बेहतर सुरक्षा प्रदान करने के लिए परतदार बनाया गया है और खोपड़ी द्वारा आघात से सुरक्षित किया गया है। सिर बालों से ढका हुआ है। बाल सिर को अत्यधिक गर्मी और सर्दी से बचाते हैं। अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) ने सभी इंद्रियों के केंद्र मस्तिष्क के महत्व को ध्यान में रखते हुए इसे इस प्रकार सुरक्षित किया है।

हृदय को छाती गुहा में स्थापित किया गया है और पसलियों की मांसपेशियों द्वारा सुरक्षित किया गया है।

गले में एक ओर फेफड़ों तक जाने वाली श्वास नली और दूसरी ओर आमाशय तक जाने वाली भोजन नली होती है। छोटी जीभ द्वारा श्वासनली में भोजन के प्रवेश को रोका जाता है।

फेफड़े बिना रुके साफ हवा शरीर में खींचते हैं जिससे हृदय को आराम मिलता है और वह शीतल होता है। हवा में ऑक्सीजन का होना भी इसी का एक उद्देश्य है।

मनुष्य को मूत्र को आवश्यकतानुसार रोकने की क्षमता दी गई है। जिससे उसका जीवन अस्त-व्यस्त नहीं होता।

बैठने के दौरान, कमज़ोर लोगों की तरह ज़मीन की कठोरता महसूस कर दर्द न हो इसके लिए पैरों को पर्याप्त मांसपेशियों वाला बनाया गया है।

यदि लिंग में कभी इरेक्शन नहीं होता तो संभोग संभव नहीं होता और शुक्राणु गर्भाशय में नहीं पहुंच पाते। विपरीत स्थिति पर विचार करें तो यदि लिंग लगातार सख्त रहता तो व्यक्ति सामान्य जीवन नहीं जी पाता। लिंग संभोग की इच्छा होने तक छिपा रह सकता है। चूंकि मनुष्य एक सम्मानित प्राणी है, इसलिए उसके जननांगों को उसकी टांगों के बीच छिपाया गया है।

हमारे बाल और नाखून बढ़ते रहते हैं और समय-समय पर काटने की आवश्यकता होती है। काटते समय हमें दर्द नहीं होता। यदि दर्द होता तो हमें बालों और दाढ़ी को बढ़ने देना पड़ता जिससे हमारा रूप अत्यंत भद्दा हो जाता या हर बार पीड़ा सहते हुए काटना पड़ता।

इसके बाद हमारे शरीर के अनेक हिस्सों में बाल होते हैं जबकि उन स्थानों पर नहीं जहां वे हानिकारक हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, यदि हमारी आँखों में बाल उग आते तो हम देख नहीं पाते, मुँह में उग आते तो भोजन और पेय निगल नहीं पाते, हाथ-पैरों में उग आते तो कुछ काम नहीं कर पाते, स्पर्श की अनुभूति से वंचित रह जाते, और यदि जननांगों में उग आते तो संभोग

के दौरान कोई आनंद नहीं ले पाते। इन क्षेत्रों में भी बाल उग सकते थे। परन्तु अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) ने सृष्टि की रचना में हमेशा मनुष्य के हित का ध्यान रखा है।

हाँ, अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) ने मनुष्य को कोई दोषपूर्ण रूप या हानिकारक प्रकृति के साथ नहीं बनाया। मनुष्य का भोजन-पानी, नींद और यौन जीवन स्वाभाविक प्रवृत्ति पर आधारित है; वह भूख-प्यास की अनुभूति से अपने जीवन को बनाए रखने के लिए आवश्यक पोषण की तलाश करता है, थकान महसूस होने पर शरीर को विश्राम देकर पुनः शक्ति प्राप्त करने के लिए नींद ढूँढ़ता है, और कामेच्छा महसूस होने पर वंश को आगे बढ़ाने के एकमात्र मार्ग यानी यौन सम्बन्ध में प्रवृत्त होता है। जब मनुष्य बीमार होता है तो अच्छा न लगने वाली दवा भी स्वास्थ्यलाभ के लिए आवश्यक होने पर लेने से हिचकिचाता है। क्योंकि यह स्वाभाविक आवश्यकता नहीं बल्कि विवशता है। यदि मनुष्य स्वाभाविक प्रवृत्ति से नहीं, केवल आवश्यकता के कारण भोजन-पानी ग्रहण करता तो वह भोजन में रुचि नहीं लेता, मरने से बचने भर खाता, और इस तरह कमज़ोर होकर बीमार पड़ जाता। वहीं, यदि वह मात्र चाहने भर से सो सकता तो अत्यधिक सोने के कारण अपने कार्यों को नज़रअन्दाज़ कर देता, और अधिक नींद से उसका स्वास्थ्य खराब हो जाता। इसी प्रकार यदि वह कामेच्छा के बिना, केवल सन्तान प्राप्ति और वंशवृद्धि के उद्देश्य से यौन सम्बन्ध बनाता तो अपने अधिक महत्वपूर्ण कार्यों में व्यस्त रहने के कारण वंश को आगे बढ़ाना सम्भव नहीं होता।

मानव शरीर उस राजा के महल के समान है जिसमें वह अपने परिवार और सेवकों के साथ रहता है; राजा और उसके परिवार की रक्षा करने वाले, उनके कार्य सम्पन्न करने वाले, आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाले और सफाई का कार्य देखने वाले सेवक होते हैं। राजा के सेवकों में बुद्धि, विवेक, स्मृति, क्रोध आदि क्षमताएँ और भावनाएँ विद्यमान हैं। इनमें से एक भी अनुपस्थित हो तो मनुष्य का जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है। उदाहरण के लिए,

यदि मनुष्य के पास स्मृति न होती तो वह अपने लाभ-हानि की बातों को, स्वयं के किए-धरे को,

कहे गए शब्दों को, जिसने उपकार किया और जिसने अहित पहुँचाया, यह सब भूल जाता, लाभदायक और हानिकारक वस्तुओं में भेद नहीं कर पाता, अपने घर का मार्ग तक भूल जाता, पढ़ी-सीखी बातें याद नहीं रहतीं, और अतीत की समस्त स्मृतियाँ मिट जातीं।

मनुष्य को प्रदत्त इन उपहारों में से एक के अभाव में उसके साथ क्या हो सकता है, यह देखने के पश्चात् यह समझना कठिन नहीं कि यदि ये सभी अनुपस्थित होतीं तो क्या परिणाम होता।

भूलने की प्रवृत्ति पर विचार करें। यदि मनुष्य अपने अनुभवों को कभी नहीं भूलता तो बीती बुरी घटनाओं को सदैव याद करके उसके दुःख सदा ताज़ा रहते। खोई हुई वस्तुओं के लिए निरन्तर व्याकुल रहता, जिनसे झगड़ा हुआ उनके प्रति सदा क्रोधित रहता, और घटनाओं के दुःख-क्रोध जब ताज़ा हों तो जीवन का आनन्द नहीं ले पाता। अत्याचारी लोग दूसरों की गलतियों को नहीं भूलते, सर्वदा दण्ड देने का मार्ग अपनाते, और द्वेष रखने वालों के अहित से कभी सुरक्षित नहीं रहा जा सकता था।

याद रखना और भूलना दो विरोधी प्रवृत्तियाँ हैं। किन्तु असीम इच्छाशक्ति, सामर्थ्य और बुद्धिमत्ता के स्वामी अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) ने दोनों को एक साथ मनुष्य को प्रदान किया है, और उसे इन दोनों से लाभ उठाने का अवसर दिया है।

अन्य प्राणियों से भिन्न मनुष्य में लज्जा की भावना होती है। यदि मनुष्य में शर्म की अनुभूति न होती तो वह अपनी गलतियाँ स्वीकार नहीं करता, स्वयं को सुधारने का प्रयत्न नहीं करता, अतिथि का सम्मान-सत्कार नहीं करता, भले कार्यों से मिलने वाले लाभ का अनुमान न लगा पाने के कारण उन्हें नहीं करता, और बुरे कार्यों से परहेज़ नहीं करता। वस्तुतः अनेक सामाजिक दायित्व तो सिर्फ दूसरों के सामने शर्मिंदा होने के डर से ही पूरे किए जाते हैं; अमानत को उसके मालिक को वापस किया जाता है, माता-पिता के अधिकारों का ख्याल रखा जाता है, और समाज में अनुचित समझे जाने वाले कर्मों से बचा जाता है।

अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) ने मनुष्य को, फिर से अन्य जीवों में न पाई जाने वाली एक विशेषता - बोलने की क्षमता प्रदान की है। मनुष्य बोलकर अपने विचारों को दूसरों तक पहुँचाता है, अपनी भावनाओं को व्यक्त करता है। पढ़ने-लिखने की योग्यता भी वाणी के

समान ही महत्वपूर्ण और मनुष्य को विशिष्ट बनाने वाला गुण है। मनुष्य लिखकर पूर्व की घटनाओं को भावी पीढ़ियों तक पहुँचाता है, अर्जित ज्ञान को पुस्तकों में सुरक्षित कर उनके लुप्त होने से बचाता है, और लिखकर ही लेन-देन का लेखा-जोखा रखता है। यदि लेखन न होता तो अतीत के विषय में कोई जानकारी नहीं होती, विद्याओं का अध्ययन नहीं किया जा सकता था, शिष्टाचार के नियम विस्मृत हो जाते, और व्यापार में होने वाली गलतियों के कारण आर्थिक जीवन अराजक हो जाता।

यह विचार उत्पन्न हो सकता है कि बोलने और लिखने की क्षमता जन्मजात नहीं, अपितु बाद में अर्जित की गई योग्यताएँ हैं, इसीलिए अरबी, हिन्दी, लैटिन आदि भाषाओं के बोलने-लिखने के तरीके भिन्न हैं। हाँ, बोलना और लिखना सीखी जाने वाली योग्यताएँ हैं। किन्तु यदि हमारे पास चिन्तन की क्षमता, हाथ, उँगलियाँ न होतीं तो हम लिख नहीं सकते थे; और जीभ तथा वाक्-संचार के अनुकूल मुख की संरचना न होती तो बोल नहीं सकते थे।

इसके अतिरिक्त मनुष्य को प्रदत्त क्रोध की भावना से वह अपने लिए हानिकारक पदार्थों को दूर रखता है, और प्रेरक ईर्ष्या की भावना से दूसरों में देखी गई अच्छी वस्तुओं को पाने का प्रयास करता है। किन्तु इस क्रोध और ईर्ष्या में संयम बरतना आवश्यक है, अन्यथा मनुष्य नकारात्मक रवैया अपना लेता है। हमें केवल उन्हीं वस्तुओं पर क्रोध करना चाहिए जो हमारे लिए हानिकारक हों, ईर्ष्या करते समय प्रशंसा की सीमाओं तक ही सीमित रहना चाहिए, और द्वेष की ओर प्रवृत्त नहीं होना चाहिए। प्रशंसा यह है कि बिना किसी के बुरे की कामना किए उनके पास मौजूद अच्छी चीज़ों को प्राप्त करने की इच्छा रखना।

मनुष्य द्वारा गहनता से अनुभूत भावनाओं में एक है - सतत अच्छे और सुन्दर की अभिलाषा तथा इसके लिए प्रयासरत रहना।

इसी भावना के द्वारा संसार को और अधिक रहने योग्य बनाया जाता है, और मानव जाति आगे बढ़ती है।

मनुष्य जब सर्वप्रथम सृष्टि में आया तो एक दुर्बल प्राणी था। तत्पश्चात उसने अपने पूर्वजों द्वारा छोड़ी गई इमारतों, उपकरणों और सामग्रियों को देखकर, स्वयं भी आगे आने वाली पीढ़ियों के लिए सुन्दर विरासत छोड़ने की आकांक्षा से कठिन परिश्रम किया।यह स्थिति क़यामत तक इसी प्रकार चलती रहेगी।

इंसान को बहुत सी चीज़ों के जानने का अवसर दिया गया है, लेकिन उसकी मौत का समय जानने की अनुमति नहीं दी गई है। क्योंकि अगर वह अपनी मौत का समय जान लेता तो

जीवन का आनंद नहीं ले पाता, अपनी संतान को आगे बढ़ाने की परवाह न करता, धरती को सुंदर बनाने का प्रयास न करता, दूसरों के लिए कुछ करने का मन नहीं करता, हमेशा अपनी मौत के बारे में सोचने में लगा रहता। अगर उसे पता होता कि उसकी मौत लंबे समय बाद होगी तो भी इससे उसका कोई लाभ नहीं होता, बल्कि वह दुनियावी इच्छाओं के पीछे भागता, सामान्य कामों में लग जाता और हद से आगे बढ़ जाता। इस स्थिति में न तो कोई नसीहत उसे फायदा पहुंचाती और न ही उसे रोका जा सकता था। मौत का समय इंसान से छुपाकर रखा गया है ताकि वह हर पल इस चिंता में रहे कि कहीं अभी उसकी मौत न हो जाए और इस तरह बहुत देर होने से पहले वह अच्छे कर्म करने लगे।

अनगिनत नेमतें इंसान के उपयोग के लिए प्रदान की गई हैं; हज़ारों प्रकार के स्वादिष्ट भोजन, तरह-तरह के फल, विभिन्न सवारी के जानवर, मधुर आवाज़ वाले पक्षी, ज़रूरत के समय खर्च करने के लिए पैसा और ज़ेवरात, स्वास्थ्य की रक्षा करने और बिगड़ जाने पर फिर से पाने के लिए इस्तेमाल करने वाली दवाइयाँ, जिनके मांस और अन्य उत्पादों से फायदा उठाया जा सके, खेती और परिवहन में इस्तेमाल किए जाने वाले जानवर, सुगंधित फूल, तरह-तरह के कपड़े... ये सब अल्लाह सुब्हानहु व तआला की ओर से इंसान को प्रदान की गई अक़्ल की नेमत का ही परिणाम हैं।

लोगों की अलग-अलग मात्रा में दुनियावी संपत्ति होने में भी हिकमत निहित है। इस तरह कुछ लोग अमीर और कुछ ग़रीब बनाए गए हैं, जैसे खाली समय में बुरी चीज़ों की ओर झुकने वाला बच्चा, आमतौर पर हर कोई अपनी कमाई करने में लगा रहता है, दूसरों को नुकसान पहुंचाने की सोचने का समय नहीं मिल पाता।

इस कायनात में बनाई गई हिकमतों और खूबसूरतियों को गिनकर ख़त्म नहीं किया जा सकता। इन हिकमतों और खूबसूरतियों को पूरी तरह केवल वही अल्लाह जानता है जिसकी रहमत और इल्म हर चीज़ को घेरे हुए है।

निष्कर्ष: इंसान को दिया गया मूल्य

अल्लाह सुब्हानहु व तआला ने इंसान को महत्व दिया है, उसे एक सम्मानित मख्लूक़ बनाया है:

"निस्संदेह हमने आदम की संतान को इज़्ज़त दी है, उन्हें ज़मीन और समुद्र में सवारी के साधन दिए हैं, उन्हें हलाल और पाक मार्जित रोज़ियाँ दी हैं और हमने उन्हें अपनी बहुत सी मख्लूक़ात से बढ़कर बनाया है।" (इस्रा, 70)

इंसान को सम्मानित करने वाली सबसे बड़ी नेमतों में से एक अक़्ल भी है। अक़्ल की बदौलत इंसान सुख पाता है, फरिश्तों से उच्च स्थान पर पहुंचता है, कायनात को देखकर अपनी स्थिति की दलीलों को समझता है, अपने ख़ालिक़ को पहचानता है, उसके सिफ़ात सीखता है। वास्तव में मनुष्य स्वयं अपने सृष्टा के अस्तित्व का प्रमाण है:

"...तुम्हारे अपने अस्तित्व में भी ऐसे प्रमाण हैं। क्या तुम फिर भी नहीं देखोगे?" (ज़ारियात, 21)

हाँ, मनुष्य का स्वयं का अस्तित्व, उसे प्रदान की गई बुद्धि जिसके बारे में वह पूरी तरह से नहीं जानता, उसके सृजनकर्ता के अस्तित्व का सबसे बड़ा प्रमाण है। मनुष्य अपनी बुद्धि की सोचने की क्षमता, ज्ञान प्राप्त करने, विभिन्न विज्ञान सीखने, तर्कशक्ति, अच्छे और बुरे में अंतर करने की क्षमता पर आश्चर्यचकित हो जाता है।

वह अपनी बुद्धि के अस्तित्व के बारे में निश्चित है, लेकिन उसे छू नहीं सकता, उसका आकार नहीं जानता, उसकी गंध या रंग को महसूस नहीं कर सकता। फिर भी बुद्धि आदेश देती है, आज्ञा मानती है, आशा करती है, सोचती है, गुप्त घटनाओं को समझ सकती है, घटनाओं के बारे में अनुमान लगाती है। जो आँखें नहीं देख सकतीं वह देख लेती है, जो बर्तनों में नहीं समा सकता वह समा जाता है, धरती और आकाश में अल्लाह (स.व.) ने जो छिपाया है उसे आँखों से बेहतर समझ लेती है। बुद्धि, ज्ञान और विवेक का स्रोत है। बुद्धि का ज्ञान जितना बढ़ता है उसका दृष्टिकोण उतना ही विस्तृत होता है, मजबूत होता है। वह अंगों को हिलने-डुलने का आदेश देती है। अंग बुद्धि के आदेश पर इतनी तेजी से प्रतिक्रिया करते हैं कि यह समझना मुश्किल होता है कि आदेश पहले आया या गति। हालाँकि विचारशील, बुद्धिमान और ज्ञानी होने के बावजूद बुद्धि, स्वयं को न जानने में असमर्थ है। क्योंकि बुद्धि, "अपने सृजनकर्ता के प्रति समर्पित व्यक्ति, स्वयं को न जानने वाला" कहलाने के अलावा स्वयं के बारे में कुछ नहीं कह सकती। बुद्धि स्वयं को नहीं जानती लेकिन अपनी बुद्धिमत्ता से घटनाओं की बारीकियों को समझ सकती है, सृष्टि में सूक्ष्म अंतरों को महसूस कर सकती है, अपने आसपास होने वाली घटनाओं का मूल्यांकन कर सकती है, उनके परिणामों के बारे में निष्कर्ष निकाल सकती है, प्रमाण प्रस्तुत कर सकती है। बुद्धि का स्वयं को न जानना, फिर भी अपने ज्ञान से निर्णय ले सकना, सही को गलत से, अच्छे को बुरे से अलग कर सकना, उसकी जटिल प्रकृति को दर्शाता है। क्योंकि वह ज्ञान से परिपूर्ण है, तीक्ष्ण बुद्धि की धनी है, फिर भी असमर्थ है; वह जिन चीजों को याद रखना चाहती है उन्हें भूल जाती है, जिन्हें भूलना चाहती है उन्हें भूल नहीं पाती, खुश रहना चाहती है, दुखी हो जाती है, जिन चीजों को सीखना नहीं चाहती उन्हें सीख लेती है, जागरूक रहना चाहती है, लेकिन अनमनी हो जाती है।

यह सब दर्शाता है कि बुद्धि सीमित है, हर चीज का सत्य नहीं जान सकती। हाँ, बुद्धि सोच सकती है लेकिन यह नहीं बता सकती कि वह कैसे सोचती है, अपनी शक्ति की सीमाओं को नहीं समझ सकती। बुद्धि की यह जटिल संरचना यह दर्शाती है कि वह अद्भुत

तरीके से रची गई है और बुद्धि भी अल्लाह (स.व.) के अस्तित्व का एक प्रमाण है।

फिर अल्लाह (स.व.) ने मनुष्य की प्रकृति के अनुसार इच्छाओं (नफ्स) की रचना की। यदि नफ्स बुद्धि के प्रकाश का उपयोग करे तो वह सलामत रहेगा और अनंत स्वर्गिक जीवन से पुरस्कृत होगा। लेकिन यदि बुद्धिमान अपनी इच्छाओं को पूरा करने में इसका उपयोग करे, तो वह दूसरों द्वारा न समझे जाने वाले कार्यों को समझने में असमर्थ हो जाएगा, साथ ही परलोक में अपने रब को देखने से वंचित कर दिया जाएगा और दंडित किया जाएगा।

बुद्धि शिल्पों के निर्माण में एक उपकरण की तरह है; कार्य उसके मापतौल और गणनाओं से चलते हैं। हर समय और हर समाज में मौजूद नैतिक नियम, रीति-रिवाजों की अच्छाई और बुराई को बुद्धि से ही जाना जाता है।

इस प्रकार अल्लाह (स.व.) ने ज्ञान प्राप्त करने के लिए बुद्धिमान मनुष्य को प्रदान करके उसे सम्मानित किया है। क्योंकि बर्तनों का मूल्य उनके भीतर की वस्तु से होता है। जब मोमिन का दिल मारिफतुल्लाह (ईश्वर-ज्ञान) का केंद्र बन जाता है, तो उसे अक्ल की नेमत से सम्मानित किया जाता है।

अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) ने जीवन को सिर्फ दुनिया तक सीमित नहीं रखा, बल्कि मनुष्यों की मृत्यु के बाद आख़िरत के जीवन में प्रवेश करने और वहाँ सदैव रहने की इच्छा की है। लेकिन चूँकि उसने अक्ल को आख़िरत के जीवन को समझने की शक्ति नहीं दी, इसलिए उसने इस कमी को रिसालत (पैग़म्बरी) के द्वारा पूरा करने का इरादा किया; उसने अपने आज्ञाकारी बंदों को खुशखबरी देने वाले और अवज्ञाकारियों को अपनी अवज्ञा से रोकने वाले पैग़म्बर भेजे। उसने इन पैग़म्बरों को वह्य (ईश्वरीय प्रकाशना) के साथ समर्थन दिया और उनके द्वारा लाए गए संदेश को लोगों के दिलों में उतारा।

अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) की ओर से वह्य के रूप में आई ज्ञान की रोशनी, अक्ल की रोशनी के सामने ऐसी है जैसे तारों की चमक के मुकाबले सूरज की रोशनी। ये भेजे गए पैग़म्बर लोगों को

उनकी अक्ल से परे दुनिया और आख़िरत में सुख के रास्ते दिखाते हैं, और अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) उनके हाथों पर प्रकट होने वाले मोजिज़ात (चमत्कारों) से उनके द्वारा लाए गए संदेश की सच्चाई को साबित करके उनका समर्थन करता है। इस तरह अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) ने अपने बंदों पर अपनी नेमतों को पूर्ण कर दिया, अपना करम दिखाया और नकारे न जा सकने वाले तरीके से अपने अस्तित्व को उनके सामने साबित किया।

अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) ने लोगों के बीच उच्च गुणों वाले पैग़म्बर भेजकर उन्हें एक बार फिर सम्मानित किया, इस तरह सूरज की तरह चमकदार अल्लाह के हुक्म और तारों की तरह चमकदार अक्ल की रोशनी एक-दूसरे को पूरा करते हैं। आख़िरकार अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) के फज़्ल से सुख पाने वाले सफल होते हैं, और सिर्फ दुनिया के पीछे भागने वाले और सच्चाई को झुठलाने वाले अपनी सज़ा पाते हैं। [13]

वह्य के अलावा अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) ने इंसान को सपने में या अर्ध-जागृत अवस्था में कुछ सच्चाइयों से अवगत कराया है, इस तरह कभी उसे आने वाली चीज़ों के प्रति आगाह किया है तो कभी उसे खुशखबरी दी है। इस तरह का ज्ञान करामात और उपहार के रूप में, उसके वफादार बंदों के लिए अल्लाह का एक एहसान है। अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) चाहता है कि ये बंदे अपने अनुभवों से हालात के मुताबिक सबक लें, कोई पहल करें या नुकसानदेह काम से बचें। बेशक ग़ैब (अदृश्य) का ज्ञान सिर्फ अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) को ही है। लेकिन अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) कुछ बंदों को होने वाली घटनाओं की पहले से सूचना दे सकता है।

---

13 *"फिर जो हमारी याद से, इस महान किताब को सुनने से दूर भागते हैं और दुनियावी सुखों के सिवा कुछ नहीं चाहते, उन्हें तुम भी छोड़ दो। उनकी जानकारी सिर्फ इतनी ही है; जो जानते हैं वही समझ सकते हैं। तुम्हारा रब उसे अच्छी तरह जानता है जो अपने रास्ते से भटक गया और जो सीधे रास्ते पर चल रहा है।"* (अन-नज्म, 29-30)

पक्षियों की रचना में हिकमत (दिव्य ज्ञान)

अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) फरमाता है:

“क्या वे आकाश की विशालता में अल्लाह के आदेश के आगे समर्पित होकर उड़ते पक्षियों को नहीं देखते? उन्हें वहाँ अल्लाह के सिवा कोई नहीं थामता।” (अन-नहल, 79)

“क्या वे अपने ऊपर पंक्तिबद्ध होकर पंख फैलाते और सिकोड़ते हुए उड़ते पक्षियों को नहीं देखते? उन्हें हवा में रहमान के सिवा कोई नहीं थामता। वह निश्चित रूप से हर चीज़ को देखता है।” (अल-मुल्क, 19)

अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) ने पक्षियों को हल्के वजन में पैदा किया ताकि वे आराम से उड़ सकें और उन्हें हवा में उड़ने के लिए ज़रूरी उपकरणों से सुसज्जित किया।

दूसरे जीवों की तरह पक्षियों द्वारा ग्रहण किया गया भोजन भी उन्हें ज़रूरी ताकत और ऊर्जा देता है, उनके अंगों के विकास को सुनिश्चित करता है।

चलने और एक जगह से दूसरी जगह उड़ान भरने के लिए पक्षियों को हाथों के बजाय दो पैर दिए गए हैं, और ज़मीन पर मजबूती से खड़े होने के लिए उनके पैरों के तलवे चौड़े बनाए गए हैं। उनकी टाँगों की खाल पर परों की ज़रूरत न रहे इस तरह मोटी है, ताकि वे ठंड और गर्मी से सुरक्षित रहें। क्योंकि अगर पक्षियों की टाँगें भी पंखों से ढकी होतीं, तो भोजन की तलाश में कभी न कभी दलदल और पानी वाले इलाकों में जाने की वजह से,

गंदे और गीले होने वाले पंखों को नुकसान पहुँचता। पक्षियों की टाँगें लंबी होती हैं इसलिए उनकी गर्दन भी आनुपातिक रूप से लंबी बनाई गई है। अगर लंबी टाँगों के साथ उनकी गर्दन छोटी होती तो ज़मीन पर हो या पानी में, अपनी छाती को ज़मीन पर टिकाए बिना वे अपना भोजन नहीं ले पाते, और इसके लिए उन्हें बड़ी मुश्किल होती। कुछ पक्षियों के लंबे चोंच होने से उनका काम और भी आसान हो जाता है। इसके विपरीत स्थिति की कल्पना करें, यानी अगर उनकी गर्दन लंबी और टाँगें छोटी होतीं तो गर्दन का वजन ज़्यादा होता, और फिर से उनके खाने-पीने में दिक्कत होती।

पक्षियों की छाती में अर्धचंद्राकार दो हड्डियाँ मिलकर एक तेज़ धार बनाती हैं। इससे वे हवा को आसानी से चीरते हुए उड़ते हैं। इसी तरह उड़ान को आसान बनाने के लिए उनके पंख भी गोल आकार में बनाए गए हैं।

हर प्रकार के पक्षी की अपने भोजन के तरीके के अनुकूल चोंच होती है। पक्षी इस चोंच से अपनी प्रजाति के अनुसार भोजन को तोड़कर, चुनकर, खोदकर या किसी और तरह से ग्रहण करते हैं।

खासकर शिकारी पक्षियों के माँस को फाड़ने के लिए तेज़ पंजे होते हैं। कुछ अन्य पक्षियों के भोजन को अच्छी तरह पकड़ने में मदद करने वाले चौड़े पंजे होते हैं। ज्यादातर घास खाने वाले पक्षियों के पंजे घास को पकड़ने में सहायक होने लायक चौड़े होते हैं।

कुछ पक्षियों की चोंच हड्डी की तरह सख्त और लंबी होती है। दाँत न होने की वजह से पक्षी अपनी चोंच को दाँत की तरह इस्तेमाल करते हैं।

पक्षी लंबे समय तक हवा में रह सकते हैं और उड़ान के दौरान जोरदार और तेज़ी से अपने पंख फड़फड़ाते हैं। इसलिए खासकर पक्षियों के पंख वाले हिस्से में उनके पंख मोटी खाल से ढके होते हैं, जो मजबूत जड़ों से उनके शरीर से जुड़े होते हैं। पक्षियों के

पंख उन्हें अत्यधिक गर्मी और सर्दी से बचाते हैं और उड़ान के दौरान अपनी पारगम्यता से हवा को उनके लिए उड़ना आसान बनाते हैं।

पक्षियों के खासकर पंख वाले हिस्सों के पंख उड़ान के दौरान इस्तेमाल होने की वजह से काफी मजबूत होते हैं।इनके अन्य हिस्सों के पंख ढकने, सुरक्षा और सुंदर दिखाने का कार्य करते हैं, इसलिए इनकी संरचना सामान्य होती है। पंख नमी और गंदगी से नष्ट नहीं होते। गीले होने पर थोड़ा सा झटका देने से वे पुनः अपने मूल रूप में आ जाते हैं।

पक्षियों को हल्का बनाने के लिए अंडे देने और मल त्याग के लिए एक ही मार्ग दिया गया है।

पूँछ के पंख उड़ान के दौरान पक्षियों को संतुलन बनाए रखने में सहायता करते हैं। यदि उनकी पूँछ में पंख न होते तो वे उड़ते समय सीधे नहीं रह पाते, बल्कि दाएँ या बाएँ झुक जाते।

पक्षियों को डरपोक बनाया गया है। इस प्रकृति के कारण वे थोड़ा सा भी खतरा महसूस करते ही उड़कर अपनी रक्षा कर लेते हैं।

चूँकि वे अपना भोजन बिना चबाए निगलते हैं, इसलिए विशेष रूप से शिकारी पक्षियों को मांस को मुँह में लेने से पहले छोटे टुकड़ों में काटने के लिए तेज़ पंजे दिए गए हैं। वे इन पंजों को चाकू की तरह प्रयोग करके भोजन को काटते हैं और आसानी से पचा लेते हैं।

पक्षियों के दाँत नहीं होते, इसलिए वे भोजन को चबाकर नहीं निगल सकते। परन्तु इसके बदले उनका पेट इस प्रकार बनाया गया है कि वह भोजन को पीस सके। यहाँ तक कि अन्य जानवरों के मल के साथ निकले बीज भी पक्षियों के पेट में पाउडर बन जाते हैं।

उड़ान के दौरान वज़न न बढ़े इसलिए पक्षी स्तनधारियों की तरह बच्चे नहीं जनते, बल्कि अंडे देते हैं। यदि वे बच्चों को अंडे से न निकालकर सीधे जन्म देते, तो उन्हें गर्भावस्था के दौरान उन्हें अपने पेट में ढोना पड़ता। इससे उन पर भार पड़ता और उनके उड़ने में बाधा आती। किन्तु हिकमत वाले अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) ने हर चीज़ को उत्कृष्ट तरीके से बनाया है।

अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) ने पक्षियों को यह प्रेरणा दी है कि वे अंडों पर बैठें और जब बच्चे अंडों से निकल जाएँ तब तक उनकी देखभाल करें जब तक वे स्वयं के लिए पर्याप्त न हो जाएँ। कितनी हिकमत है कि वह अपने पेट में पचे हुए भोजन को निकालकर अपने बच्चों को खिलाता है।

मनुष्य अपने बच्चों को पालते समय उनकी संख्या पर गर्व करता है, उनसे काम लेता है और उनके द्वारा अपनी संतान को आगे बढ़ाने की आशा रखता है। परन्तु पक्षी सोच नहीं सकते, अपने बच्चों के प्रति आशा नहीं रखते। फिर भी अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) की हिकमत से वे अपने बच्चों का पालन-पोषण करते समय बड़ी कठिनाइयों का सामना करते हैं। निश्चित ही यह अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) की प्रेरणा है। अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) उसे यह प्रेरणा देता है कि वह कैसे गर्भवती होगी, फिर अंडे देकर उन पर बैठेगी और बच्चों को जन्म देने के लिए घोंसला बनाने हेतु घास व टहनियाँ लाएगी, और अंडों की रक्षा वह तब तक करेगी जब तक बच्चे बाहर न निकल आएँ।

कबूतर को प्रेरित ज्ञान के अनुसार बच्चों के जन्म का समय पता चल जाता है, वह अंडे सेते-सेते छोड़ देता है और बच्चे अंडों से बाहर आ जाते हैं। अगर किसी प्रकार अंडा खराब हो गया हो तो वह इसे समझकर अंडे को छोड़ देता है।

कबूतर नवजात बच्चों को अपने पंखों के नीचे छुपा लेता है और जब तक वे बाहरी वातावरण के अभ्यस्त नहीं हो जाते, तब तक उन्हें बाहर नहीं निकालता। फिर जब वह उन्हें खिलाता है तो पहले आदत डालने के लिए अपनी चोंच से उनके पेट में हवा भरता है, उसके बाद पहले खाए गए भोजन को पचाकर अपने बच्चे के मुँह में देता है। जबतक उसका बच्चा संतुष्ट न हो जाए, वह इस प्रक्रिया को दोहराता है। यदि वह अपने पेट में पचे हुए भोजन के बजाय साबुत दाने ही बच्चे को देता, तो बच्चा इन दानों को पचा नहीं पाता, और भूख से मर जाता।

कुछ पक्षियों को विशेष हिकमतों के अनुसार अलग तरह से बनाया गया है। उदाहरण के लिए, मुर्गी अपने बच्चों को खिला नहीं सकती। इसके स्थान पर बच्चा अंडे से निकलते ही

अपना भोजन स्वयं ढूँढकर खाने लगता है।

नर और मादा कबूतर बारी-बारी से अंडों पर बैठते हैं और उन्हें गर्म करते हैं। मानो उन्हें यह बता दिया गया हो कि यदि वे ऐसा नहीं करेंगे तो अंडे खराब हो जाएँगे।

पक्षियों के अंडे भी अद्भुत होते हैं। अंडे का कुछ भाग पीला होता है जबकि शेष सफेद और पतला होता है। अंडे का कुछ हिस्सा बच्चे को बनाता है। जब तक अंडा फूटकर बच्चा बाहर नहीं निकल आता, तब तक शेष भाग से बच्चा पोषण प्राप्त करता रहता है।

पक्षियों के पेट तक जाने वाली नली संकरी होती है, इसलिए उनका खाया हुआ भोजन थोड़ी मात्रा में ही नली से गुजर सकता है। पक्षी भोजन करते समय अत्यंत सावधान रहता है, उतावलेपन में मुँह से कुछ भी नहीं लेता। इस स्थिति में यदि वह नया दाना लेने से पहले पहले वाले दाने के पेट तक पहुँचने की प्रतीक्षा करे, तो उसका भोजन करने का कार्य बहुत लंबा खिंच जाए। इसलिए पेट के अतिरिक्त, पक्षियों में भोजन नली से लटकी हुई एक थैली होती है जिसे "पेषणी" कहते हैं। पक्षी द्वारा शीघ्रता से उठाए गए दाने पहले यहाँ एकत्र होते हैं। दाने बाद में धीरे-धीरे पेट में भेजे जाते हैं। साथ ही, जब पक्षी अपने बच्चे को खिलाता है तो भोजन पेट से नहीं बल्कि मुँह के समीप स्थित इस पेषणी से निकालता है। इस प्रकार भोजन को निकट से निकालने में उसे कोई कठिनाई नहीं होती।

पक्षियों के पंख वस्त्र के समान बारीक धागों से बने होते हैं। ये धागे मजबूत और लचीले होते हैं, टूटते या फटते नहीं। कुछ बालों की तरह परस्पर उलझे होते हैं। पक्षी जब अपने पंख फैलाता है तो समस्त पंख एक साथ नहीं खुलते। इस तरह हवा पंखों के मध्य प्रवेश करके उसकी उड़ान को कठिन नहीं बनाती। पंख के मध्य में एक कठोर और सूखी पंख की जड़ होती है। यह जड़ चारों ओर के पंखों को दृढ़ता से पकड़े रहती है। यह कठोर जड़ न होती तो पंख हवा के सम्मुख आते ही बिखर जाते। साथ ही, पंख की जड़ को उड़ान के दौरान हल्कापन बनाए रखने के लिए सूखा बनाया गया है।

कुछ पक्षियों को लंबे पैर बनाए जाने का एक और हिकमत यह है कि उनका शिकार करना आसान हो। अर्थात, इस प्रकार के पक्षी सामान्यतः दलदली क्षेत्रों में शिकार करते हैं। शिकार करते समय वे अत्यंत सतर्क रहते हैं, थोड़े से खतरे पर तात्कालिक प्रतिक्रिया देते हैं। शिकार करते समय वे पानी को देखते रहते हैं, शिकार को देखते ही कुछ कदम चलकर उसे पकड़ लेते हैं। यदि ऐसे पक्षी के पैर छोटे होते, तो शिकार पकड़ने हेतु पानी

की ओर झुकने पर उसका पेट पानी से छू जाता, जिससे वह घबरा जाता और इस क्रिया से शिकार भाग जाता।

कबूतर जैसे पक्षी पूरा दिन भोजन की तलाश में भटकते हैं। परंतु न तो भूख से मरते हैं, न ही दिनभर में जितना भोजन चाहिए उसे एक साथ इकट्ठा कर लेते हैं। अल्लाह (स.व.) द्वारा स्थापित प्राकृतिक नियम भी यही चाहता है; रोज़ी की तलाश में भटकना जीवों के हित में है। यदि पक्षी आसानी से दिनभर का भोजन एक साथ इकट्ठा कर लेते तो उसपर टूट पड़ते और पेट भरने से पहले वहाँ से नहीं हटते। इस तरह ज्यादा खाने से भरे पेट के साथ, जैसे कुछ जलपक्षी बहुत सारी मछलियाँ खाकर बेचैन हो जाते हैं और फिर उल्टी करके हल्का होकर उड़ पाते हैं, वैसे ही यदि वे भोजन न निकाल पाते तो उड़ नहीं पाते। आश्चर्य की बात है कि मनुष्य भी ऐसे ही हैं; यदि बिना परिश्रम के आसानी से सब कुछ मिल जाए तो यह निश्चित ही उनके लिए हितकर नहीं बल्कि हानिकारक होगा।

उल्लू और चमगादड़ जैसे कुछ पक्षी केवल रात में ही निकलते हैं। ये पक्षी रात के समय हवा में भरे मच्छरों और तितलियों आदि से अपना पेट भरते हैं। ये पक्षी सूरज निकलते ही छिप जाते हैं। जाहिर है कि शिकार में दिन का प्रकाश उनके किसी काम का नहीं। इसलिए आसानी से शिकार कर सकें, उनके लिए शिकार रात में हवा में घूमने वाले कीट बना दिए गए हैं।

चमगादड़ों के पंख नहीं होते। उन्हें पंखों के बजाय मुँह और दाँत दिए गए हैं। चमगादड़ स्तनधारियों की तरह अपने बच्चों को जन्म देते हैं। पंख न होने पर भी अल्लाह (स.व.) ने उन्हें उड़ने की क्षमता देकर यह दिखाया है कि बिना पंखों के भी कोई जीव उसकी मर्जी से उड़ सकता है। यहाँ तक कि बिना पंखों के भी सिर्फ चमगादड़ ही नहीं उड़ते। मछलियों में भी कुछ ऐसी हैं जो पानी से बाहर लंबी छलांग लगाकर फिर से पानी में घुस जाती हैं।

अंडे सेने की अवधि में नर और मादा पक्षी का सहयोग भी काफी दिलचस्प है। इन पक्षियों में से जब एक को भोजन की आवश्यकता होती है तो दूसरा पक्षी अंडे सेने की ड्यूटी संभाल लेता है। फिर जब ये पक्षी घोंसले से दूर जाते हैं तो इतने लंबे समय तक नहीं रुकते, पेट भरते ही लौट आते हैं।

नर पक्षी, उस मादा पक्षी को जिसके पेट में अंडे हैं, जब अंडे देने का समय नज़दीक आता है तो वह उसे घोंसले से बाहर अंडे न देने के लिए बहुत सावधानी से रोकता है, बार-बार धकेलता है, चोंच से डाँटता है। नर पक्षी भूखे बच्चों को मेहनत से पालता-पोसता है। फिर

जब वे अपने आप खाने लायक बड़े हो जाते हैं तो उन्हें दूर कर देता है और दूसरे बच्चों की देखभाल में लग जाता है।

शिकारी पक्षी अपने शिकार पर इतनी तेजी से झपटते हैं कि शिकार का भागना लगभग नामुमकिन होता है। इन पक्षियों की चोंच और पंजे चाकू की तरह तेज होते हैं। उनके पंजे काँटे की तरह शिकार के मांस में फँस जाते हैं और खींचकर नोच लेते हैं।

पानी में शिकार करने वाले पक्षियों को भी अपना शिकार आसानी से पकड़ सकें इसलिए तैरने और गोते लगाने का कौशल दिया गया है।

निष्कर्ष यह कि अल्लाह (स.व.) ने हर पक्षी को उसके शिकार करने के तरीके के अनुसार ही बनाया है।

जानवरों के सृजन में निहित बुद्धिमत्ता

"और जानवरों को भी उसी ने पैदा किया। उनमें तुम्हारे लिए गर्मी (के साधन) और अनेक फायदे हैं। उनमें से कुछ को तुम खाते भी हो। उन्हें शाम को लाते और सुबह छोड़ते समय तुम्हारे लिए एक सुंदर (आनंद) होता है। ये जानवर तुम्हारे बोझ को उस स्थान तक ले जाते हैं जहाँ तक तुम केवल कठिन परिश्रम से ही पहुँच पाते। निस्संदेह तुम्हारा रब बड़ी दया वाला, रहम वाला है। और घोड़ों, खच्चरों और गधों को तुम्हारी सवारी और (आँखों के) शृंगार के लिए (बनाया)। अल्लाह इस समय तुम्हारी समझ से बाहर (और भी वाहन) पैदा करता है।" (नहल, 5-8)

जैसा कि आयत में बताया गया है, अल्लाह (स.व.) ने जानवरों को मनुष्यों के लिए ही बनाया है।

जानवरों की हड्डियाँ काफी मजबूत होती हैं। हड्डियों पर मांस चढ़ा होता है। यह मांस, मजबूत मांसपेशियों और सख्त नसों से जुड़ा होता है। मांस न तो ढीला और लटकता हुआ होता है, न ही पत्थर की तरह सख्त बल्कि मध्यम कठोरता का होता है। जानवरों के शरीर को मोटी चमड़ी ढँकती है। इस तरह वे जिन कामों में लगाए जाते हैं और जिनसे माल ढोया जाता है, उनमें और अधिक सहनशील होते हैं।

जानवरों को सुनने और देखने की क्षमता के साथ बनाया गया है ताकि वे मनुष्यों की आज्ञाओं का पालन कर सकें। यदि ऐसा न होता तो मनुष्य जानवरों से लाभ न उठा पाते, न

ही उनसे अपना मनचाहा काम करवा पाते या अपनी मनचाही जगह ले जा पाते।

फिर ईश्वरीय बुद्धिमत्ता के अनुसार, मनुष्य के अधीन होने के लिए जानवरों को बुद्धि और विवेक से वंचित रखा गया है। इस तरह जानवर, अनाज पीसने के काम में, भारी बोझ ढोने में थक जाने पर भी अपने मालिक के खिलाफ विद्रोह नहीं करता।

अल्लाह (स.व.) जानता था कि मनुष्यों को काम करने की आवश्यकता है और वे कुछ भारी कामों को करने में सक्षम नहीं हैं। यदि अल्लाह (स.व.) इन भारी कामों में मनुष्यों की मदद के लिए जानवरों को न बनाता तो मनुष्य थक जाते, निढाल हो जाते, अपना काम और व्यवसाय न कर पाते, विद्या अर्जित करने का समय न निकाल पाते। थकान तो एक बात, अपनी आजीविका कमाना भी मुश्किल हो जाता। अल्लाह ने मनुष्यों की सेवा में जानवरों को लगाकर उन पर बड़ा एहसान किया है।

जीवों की शारीरिक संरचना उनकी प्रकृति के अनुरूप बनाई गई है। मनुष्य कुछ शिल्पकारी करता है, विभिन्न विद्याएँ सीखता है, इमारतें बनाता है और व्यापार आदि कार्यों में लगा रहता है इसलिए उसे बुद्धि, विवेक और सोचने की क्षमता दी गई है, वस्तुओं को पकड़ने के लिए अँगुलियों वाले हाथ प्रदान किए गए हैं। शिकारी जानवर शिकार करके अपना भोजन जुटाते हैं इसलिए उन्हें तेज दाँत, पंजे और शिकार पर झपटने की गति दी गई है। चरने वाले जानवर न तो मनुष्यों की तरह विभिन्न काम करके, न ही शिकारी जानवरों की तरह शिकार करके अपना भोजन जुटाते हैं, इसलिए कुछ को चरते समय सख्त जमीन पर आसानी से चलने के लिए मजबूत खुर दिए गए हैं, कुछ को बोझ लादे जाने या सवारी करते समय जमीन पर मजबूती से खड़े रहने के लिए खुर जैसे चौड़े पैर दिए गए हैं।

हाँ, शिकारी जानवरों को तीखे दाँत, चौड़े मुँह और अपने शिकार को आसानी से पकड़ने के लिए आवश्यक शक्ति और गति प्रदान की गई है। यदि इन जानवरों के पालतू जानवरों की तरह

चौड़े खुर होते तो वे शिकार नहीं कर पाते। इसी तरह, यदि शाकाहारी जानवरों के पंजे और तीखे दाँत होते तो उन्हें एक ऐसी चीज़ मिलती जिसकी उन्हें आवश्यकता नहीं है। अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) ने अपनी दिव्य न्याय और हिकमत से प्रत्येक प्राणी को जीवन यापन के लिए आवश्यक उपकरण दिए हैं, न कम न ज़्यादा।

मुर्गी और बतख जैसे कुछ दो पैर वाले जानवरों के बच्चे अंडे से निकलते ही बिना किसी सहारे या प्रशिक्षण के माँ के पीछे चलने लगते हैं। जबकि उनकी माताएँ न तो मनुष्यों की तरह बुद्धिमान और ज्ञानी हैं, न ही प्रशिक्षण देने में सक्षम, और न ही उनके हाथ और उंगलियाँ हैं। इसलिए उनके बच्चों को स्वयं सक्षम बनाया गया है। उदाहरण के लिए, मुर्गी और तीतर जैसे कुछ पक्षियों के बच्चे अंडे से निकलते ही घूमने-फिरने और भोजन की तलाश शुरू कर देते हैं। जबकि कबूतर और फाख्ता जैसे नाजुक पक्षियों के बच्चे स्वयं चलने-फिरने में असमर्थ होते हैं, इसलिए उनकी माताओं में स्नेह की भावना पैदा की गई है। माताएँ अपने पेट में जमा किए भोजन को निकालकर अपने बच्चों के मुँह में डालती हैं। जब तक बच्चे स्वयं सक्षम नहीं हो जाते, माताएँ उनकी इस तरह देखभाल करती हैं।

अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) ने अपनी दिव्य हिकमत के अनुसार हर प्राणी को आवश्यक स्नेह की भावना प्रदान की है।

चलते समय जानवरों के पैर समन्वय से चलते हैं। यदि पैर स्वतंत्र रूप से चलते तो उनका चलना संभव नहीं होता। दो पैर वाले जानवर चलते समय एक पैर आगे बढ़ाते हैं और दूसरे से संतुलन बनाए रखते हैं। चौपाये जानवर तिरछे तरीके से पहले दाएँ अगले और बाएँ पिछले पैर को आगे

बढ़ाते हैं, फिर बाएँ अगले और दाएँ पिछले पैर को आगे बढ़ाते हैं। इस तरह दो पैरों से कदम बढ़ाते हुए, वे दूसरे दो पैरों से संतुलन बनाए रखते हैं। यदि वे तिरछे न चलकर एक ही तरफ के पैरों को एक साथ चलाते तो दो पैरों पर संतुलन न बना पाने वाली कुर्सी की तरह गिर जाते। यदि वे पहले अगले फिर पिछले पैरों को एक साथ आगे बढ़ाते तो भी नहीं चल पाते। इस तरह वे जिस पैर पर चलते हैं और संतुलन बनाए रखते हैं, उन्हें लगातार तेज़ी से हिलाकर बिना गिरे चल पाते हैं।

घोड़ा, गधा कृषि कार्यों और परिवहन में मनुष्य की सेवा के लिए दिए गए हैं। क्रोधित होने पर ऊँट को कई आदमी नहीं रोक सकते। सामान्य समय में वह एक छोटे बच्चे के आगे भी झुक जाता है। एक ताकतवर बैल अपने मालिक के आगे झुकता है, अपनी गर्दन में जुआ डालवाता है। घोड़ा युद्ध का साधन है, उस पर सवार होकर दुश्मन पर हमला किया जाता है, तीर और भाला ले जाया जाता है। भेड़ों के झुंड की देखभाल एक छोटा बच्चा भी कर सकता है। यदि भेड़ें सोचने-समझने वाली, क्रोध करने वाली होतीं तो क्रोधित होकर बिखर जाने पर उन्हें फिर से इकट्ठा करना बहुत मुश्किल होता। इसी तरह सभी जानवर मनुष्य की सेवा के लिए दिए गए हैं। जानवरों का मनुष्य के आगे आज्ञाकारी होने का कारण निश्चित रूप से उन्हें बुद्धि और विचार शक्ति से वंचित रखना है। ताकि एक जानवर

कठिन कामों में जुटकर थक जाए तो भी अपने मालिक से मुँह न मोड़े। यदि पालतू जानवरों की तरह जंगली जानवर भी बुद्धिमान और विचारशील होते तो क्रोधित होने या भूखे रहने पर मनुष्यों पर हमला करते, उन्हें चैन से नहीं बैठने देते। मनुष्यों की शांति और सुख के लिए जंगली जानवर स्वभाव से ही मनुष्यों से छिपे रहते हैं, बस्तियों से दूर रहते हैं, और अक्सर शिकार के लिए भी रात को निकलते हैं। मानो कोई छुपा हाथ उन्हें मनुष्यों से दूर रखता है।

अन्यथा वे मनुष्यों के रहने वाले स्थानों में घुस जाते, उन्हें उनके घरों में भी चैन से नहीं बैठने देते।

दूसरी ओर, एक शिकारी जानवर कुत्ता मनुष्य की सेवा के लिए दिया गया है। पालतू कुत्ते अपने मालिक को कोई नुकसान न हो इसके लिए जान तक दे देते हैं, बिना सोए मालिक के घर की रखवाली करते हैं। कोई खतरा महसूस होने पर भौंककर मालिक को जगा देते हैं। वह इतना वफादार जानवर है कि कभी-कभी अपने मालिक के साथ भूख-प्यास सहता है, कठिनाइयाँ झेलता है। कुत्ते स्वभाव से ही पहरेदारी और शिकार के लिए प्रशिक्षित किए जाने योग्य जानवर हैं। इस तरह के कार्यों के लिए उन्हें तीखे दाँत, पंजे और चोरों-शक्तियों को अपने क्षेत्र से दूर रखने के लिए तीखी गंध सूँघने की क्षमता दी गई है।

ऊँट की पीठ आराम से बैठने और आसानी से सामान ढोने के लिए सपाट बनाई गई है। ऊँट का जननांग संभोग आसानी से हो सके इसलिए पीछे खुला रखा गया है। क्योंकि यदि नीचे होता तो संभोग संभव नहीं होता। दूसरी ओर, हाथी का जननांग नीचे होने के कारण संभोग के समय वह अपने पिछले हिस्से को ऊपर उठाकर नर हाथी को सुविधा प्रदान करता है। हाथी का जननांग अन्य जानवरों की तरह खुला, पिछले हिस्से में बनाया गया है, इसलिए उसे इस तरह की सुविधा प्रदान की गई है। निस्संदेह ये सभी सच्चाइयाँ दिव्य हिकमत से परे नहीं हैं।

जानवरों के शरीर ठंड और गर्मी से बचाव के लिए बालों और रोओं से ढके होते हैं। उनके पैरों में चलते समय चोट न लगे इसके लिए खुर और नाखून होते हैं। जिन जानवरों के खुर नहीं होते उनके पंजे होते हैं।

जानवरों के पास बुद्धि, हाथ और उंगलियाँ नहीं होतीं। इसलिए अत्यधिक गर्मी और सर्दी जैसे बाहरी प्रभावों, चोटों और गिरने से वे पूरी तरह अपना बचाव नहीं कर सकते। इसलिए अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) ने अपनी दिव्य दया से, उनके जीवन भर न बदलने और न ही नए करने की आवश्यकता वाले तरीके से उनके शरीरों को उनकी खाल से

सुरक्षित किया है। जबकि मनुष्य अपनी बुद्धि से घटनाओं को समझता है, हर तरह के खतरे से अपने हाथों से बनाए गए उपकरणों से अपना बचाव करता है।प्रकृति के अनुसार मनुष्य बुरे कार्यों की ओर अधिक झुकाव रखता है, परंतु वह भले और बुरे दोनों कार्यों में संलग्न होता है। वास्तव में, मनुष्य के लिए अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु परिश्रम करना उसके हित में है और एक गहन हिकमत पर आधारित है। यदि उसे हर वस्तु तैयार मिल जाए तो वह अहंकारी और उद्दंड बन जाएगा। फिर वह संसार के सर्वाधिक हानिकारक प्राणियों में से एक हो जाएगा, और उसे प्राप्त बुद्धि का उपयोग सदैव बुरे कार्यों में करेगा।

मनुष्य एक सम्माननीय प्राणी है। इसलिए उसे पशुओं के विपरीत वस्त्र चुनने की स्वतंत्रता दी गई है। मनुष्य इच्छानुसार वस्त्र धारण करता है, उतारता है, सजता-संवरता है और अपने प्रियजनों को प्रसन्न करने का प्रयास करता है। सुगंधित पदार्थों से स्वयं को और अपने आस-पास के लोगों को तरोताजा करता है। मनुष्य को प्रदान की गई ये सुविधाएँ निस्संदेह उसका सम्मान बढ़ाने के लिए हैं।

मरुस्थलों में रहने वाले जंगली जानवर मृत्यु का आभास होते ही एकांत स्थान पर चले जाते हैं और वहीं प्राण त्याग देते हैं। जैसे मृत मनुष्यों को दफनाकर दृष्टि से ओझल कर दिया जाता है, वैसे ही ये जानवर एकांत में मरते हैं। अन्यथा इतने सारे जानवरों के शव कहाँ विलुप्त हो जाते? यदि कहें कि संख्या कम होने के कारण दिखाई नहीं देते तो वे कम तो हैं नहीं। बल्कि मरुस्थलों और खुले मैदानों में मनुष्यों से भी अधिक संख्या में शेर, लकड़बग्घे, गाय, गधे, पहाड़ी बकरियाँ, ऊँट, सूअर, भेड़िये, जंगली पक्षी और अन्य

वन्य प्राणी निवास करते हैं। प्रतिदिन इन जानवरों के हजारों जन्म लेते और मरते हैं। किंतु इन मृत जानवरों की हड्डियाँ भी परेशानी का कारण बनने वाली मात्रा में खुले में नहीं मिलतीं। जैसा कि पहले बताया गया, ये जानवर मृत्यु का आभास होते ही एकांत स्थान पर चले जाते हैं और वहीं प्राण त्याग देते हैं। अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) ने मृत शरीरों को छिपाने का तरीका इस प्रकार उन्हें प्रेरित किया है।

जानवर चलते समय सावधानीपूर्वक अपने सामने देखते हैं, दीवार से नहीं टकराते या गड्ढे में नहीं गिरते। खतरनाक वस्तु के निकट आते ही तुरंत सहमकर दूर हो जाते हैं। जानवर अपने ऊपर आने वाली घटना के परिणाम का अनुमान नहीं लगा सकते। किंतु अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) इस सतर्कता और भय के माध्यम से उन्हें संकट से बचाता है।

जानवर पानी पीते समय सावधानी से छानकर पीते हैं। उनके मुख के चारों ओर लंबे बाल होते हैं। ये बाल पानी की सतह पर तैरते धूल और घास को हटा देते हैं, पानी को हल्का हिलाकर उसकी मैलापन दूर करते हैं और नीचे का स्वच्छ जल पीते हैं।

जानवरों की पूँछ भी विचित्र होती है। उनकी पूँछ रोएँदार आवरण की तरह उनके जननांगों को ढकती है। जानवरों के पिछले भाग में, उदर की ओर बढ़ते हुए क्षेत्र में मल के अवशेष जमा रहते हैं। इस कारण इन स्थानों पर मक्खियाँ भिन्नती हैं। जानवर पूँछ हिलाकर इन मक्खियों को भगाते हैं। सिर, मुख और गर्दन जैसे अग्र भागों पर बैठी मक्खियों को सिर हिलाकर दूर करते हैं। जब मक्खी सिर या पिछले भाग से दूर कहीं बैठती है तो जानवर अपने विशेष ढंग से केवल उस भाग की त्वचा को हिलाकर इन मक्खियों को

भगा देते हैं। हाथों से वंचित जानवर के लिए यह अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) की एक स्पष्ट कृपा है।

पूँछ का एक अन्य लाभ यह है कि जानवर उसे दाएँ-बाएँ हिलाकर थोड़ा आराम प्राप्त करता है। क्योंकि जानवर चार पैरों पर खड़ा होता है, विशेषकर बोझा ढोते समय पैर नहीं हिला सकता। ऐसी स्थिति में वह अपने शरीर के एक भाग, पूँछ को हिलाकर कुछ राहत पाता है। साथ ही, जानवर बोझा लादकर ढलान से उतरते समय बोझा गर्दन की ओर खिसक सकता है। ऐसे में पूँछ खींचकर जानवर को धीमा किया जाता है और बोझ को ठीक किया जाता है।

हाथियों की एक लंबी सूँड होती है। वे इसे हाथ के रूप में प्रयोग करके भोजन मुँह तक पहुँचाते हैं। यदि हाथियों की सूँड न होती तो अन्य जानवरों की तरह उनकी गर्दन लंबी न होने के कारण जमीन पर पड़ा भोजन नहीं उठा पाते। इसके अतिरिक्त, हाथी सूँड से साँस लेते हैं, उसी से पीने का पानी मुँह में खींचते हैं और पीठ पर बैठे स्वामी के लिए जमीन से वस्तु उठाकर दे सकते हैं।

जिराफ़ ऊँची डालियों के पत्तों से पोषण प्राप्त करते हैं, इसलिए उन्हें अत्यंत लंबी गर्दन प्रदान की गई है।

लोमड़ी जमीन के नीचे अपने बिल में दो रास्ते बनाती है। एक का उपयोग बिल में आने-जाने के लिए करती है, दूसरे का उपयोग संकट के समय भागने के लिए करती है। लोमड़ी इन दो रास्तों के अतिरिक्त बिल तक जाने वाली अन्य सुरंगें भी बनाती है। किंतु ये सीधे बिल तक नहीं जातीं, बिल से केवल एक पतली दीवार द्वारा अलग रहती हैं। जब लोमड़ी

बिल में होती है और सामान्य रास्ते से कोई खतरा निकट आता हुआ महसूस करती है तो सिर से इन सुरंगों की एक दीवार गिराकर खतरे से बच निकलती है।

निष्कर्षतः अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) ने जानवरों को भिन्न प्रकृतियों में रचा है; खाए जाने वाले जानवर घास चरते हैं और कोमल स्वभाव के होते हैं, बोझा ढोने वाले जानवरों की शारीरिक संरचना भार वहन के अनुकूल होती है, शांत प्रवृत्ति के होते हैं, आमतौर पर उनसे माँगा गया कार्य कर देते हैं। कुछ जानवर स्वभाव से ही जंगली होते हैं फिर भी पालतू बनाकर विविध कार्यों में प्रयुक्त किए जा सकते हैं। उदाहरणार्थ, हाथी ऐसा ही जानवर है। हाथी बुद्धिमान होते हैं, सीखने की क्षमता रखते हैं। वे अपने मालिकों के साथ घुल-मिल जाते हैं। पालतू बनाए गए हाथी भार ढोने और युद्धों में प्रयुक्त होते हैं। इसी प्रकार बिल्ली, कबूतर और बाज पालतू बनाए जा सकने वाले जंगली जानवर हैं। बिल्ली मनुष्य के साथ आसानी से घुल-मिल जाती है, साथ निभाती है। कबूतर स्थानों को पहचान सकता है, आवश्यकता पड़ने पर शीघ्रता से एक स्थान से दूसरे स्थान तक संदेश पहुँचा सकता है। बाज को प्रशिक्षित कर शिकार में प्रयोग किया जाता है।

मधुमक्खी, चींटी, मकड़ी, रेशम कीट और मक्खी जैसे जीवों की रचना में निहित हिकमतें

"धरती पर चलने-फिरने वाले सभी जानवर और आकाश में दो पंखों से उड़ने वाले सभी पक्षी तुम्हारी ही तरह समुदाय हैं। हमने इस किताब में किसी चीज़ को अधूरा नहीं छोड़ा। अंततः (सभी) इकट्ठा किए जाएँगे और अपने रब के सामने पेश किए जाएँगे।" (अनआम, 38)

चींटियाँ समूह में रहने वाली सामाजिक प्राणी हैं। वे अपना भोजन सामूहिक रूप से एकत्र करती हैं। फिर जब अत्यधिक गर्मी या सर्दी के कारण उन्हें अपने घोंसलों से बाहर नहीं निकलना चाहिए, तो वे इस एकत्रित भोजन का उपभोग करती हैं। ये जीव अक्सर मनुष्यों से भी अधिक सतर्क व्यवहार करते हैं।

मनुष्यों की तरह ही, चींटियाँ भी अपना भार ढोने या जो भी कार्य कर रही हों, उसमें एक-दूसरे की सहायता करती हैं।

चींटियाँ आमतौर पर मिट्टी खोदकर अपने घोंसले बनाती हैं। खोदते समय निकली मिट्टी को बाहर निकालकर वे अपने घोंसलों में जगह बनाती हैं। चींटी मिट्टी की नमी से

अंकुरित न हो जाए इसलिए, अपने घोंसले में ले जाने वाले दानों को टुकड़ों में विभाजित कर देती है। निस्संदेह, उसे यह करने की प्रेरणा अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) ने दी है। लेकिन सारे प्रयासों के बावजूद यदि उसके घोंसले में ले जाया गया दाना गीला हो जाता है, तो सावधानी के तौर पर उसे बाहर निकाल कर सुखा देती है।

● अर्ज़ू तोज़्लू, "जंगली मधुमक्खियों के घोंसले ज़मीन के अंदर होते हैं"

चींटियाँ बाढ़ और बहाव से प्रभावित न हों इसलिए अपने घोंसले आमतौर पर ऊँचे स्थानों पर बनाती हैं।

मधुमक्खियाँ भोजन एकत्र करते समय उनमें से एक उनका नेतृत्व करती है। यदि उसी समय कोई अन्य मधुमक्खी भी नेतृत्व का दावा करती है, तो उनमें मतभेद न हो इसलिए इन मधुमक्खियों में से एक दूसरी को मार देती है।

मधुमक्खियाँ परागकणों से पोषण प्राप्त करती हैं। फिर ये परागकण उनके पेट में शहद में परिवर्तित हो जाते हैं। *"तुम्हारे रब ने मधुमक्खी को प्रेरणा दी: पहाड़ों से, पेड़ों से और मनुष्यों द्वारा बनाए गए मंडपों से अपने लिए घर (छत्ते) बना। फिर हर प्रकार के फलों में से खा और अपने रब द्वारा तुम्हारे लिए आसान बनाई गई चरागाहों के मार्गों पर चल। उनके पेट से विभिन्न रंगों का एक पेय (शहद) निकलता है, जिसमें लोगों के लिए स्वास्थ्य है। निश्चय ही इसमें सोच-विचार करने वाले समुदाय के लिए एक बड़ी निशानी है।"* (नह्ल, 68-69) आयत में जैसे वर्णित है, शहद स्वास्थ्य का स्रोत है।

मधुमक्खियाँ अपने अंदर शहद बनाने और सुरक्षित रखने के लिए अपने पैरों से अपने घोंसलों में मोम ले जाती हैं। शहद को संरक्षित करने के लिए मोम सर्वोत्तम पदार्थ है। वहीं दूसरी ओर, एक मक्खी न तो शहद बना सकती है, न मोम जमा कर सकती है और न ही पहाड़ी क्षेत्रों में, पेड़ों की चोटियों पर मोम के अंदर बनाए गए इस शहद को लंबे समय तक बिना खराब हुए सुरक्षित रख सकती है।

मधुमक्खियाँ दिन में अपने घोंसलों से निकलकर परागकण एकत्र करना शुरू कर देती हैं। शाम होते-होते वे अपने घोंसलों में लौट आती हैं। मधुमक्खियाँ एकत्रित परागकणों से शहद का उत्पादन करती हैं। यह शहद उनके भोजन का एक हिस्सा होता है, जबकि शेष भाग वे संग्रहित कर लेती हैं। कुछ मधुमक्खियाँ घोंसले में संग्रहित शहद की रखवाली करती हैं।

मकड़ियाँ अपने शरीर से स्रावित चिपचिपे और तरल रेशमी पदार्थ से न केवल अपने घर बुनती हैं, बल्कि शिकार करने के लिए जाल भी फैलाती हैं।मकड़ी अपने द्वारा पकड़े गए छोटे जीवों से भोजन प्राप्त करती है।

मकड़ी अपना घर बुनते हुए जाल के एक कोने में बनाती है। उसके घर की चौड़ाई उतनी ही होती है जितने में वह स्वयं समा सके। जब मक्खी जैसे छोटे जीव मकड़ी के जाल में फँस जाते हैं, तो मकड़ी तेजी से अपने घर से निकलकर सावधानीपूर्वक शिकार को फँसी जगह से निकालकर अपने घर ले आती है। वह पकड़े गए इस जीव के शरीर का रस चूसकर अपना पोषण करती है। अगर उसके जाल में शिकार फँसे समय उसे भूख न हो, तो वह उसे नहीं छूती, बाद में भूख लगने पर उसे खाती है। अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) ने उसे यह प्रेरणा दी है कि वह कैसे जाल बिछाकर शिकार करे, जैसे कोई इंसान जानता हो।

रेशम का कीड़ा भी बहुत ही आश्चर्यजनक जीव है। ऐसा कि इंसान इस जीव को देखकर सीधे अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) को याद कर लेता है। क्योंकि रेशम के कीड़े का एकमात्र काम मनुष्य के लाभ के लिए काम करना और रेशम का उत्पादन करना है।

रेशम के कीड़ों से रेशम इस प्रकार प्राप्त किया जाता है: तितली के अंडों से लार्वा के रूप में इल्लियाँ निकलती हैं। फिर रेशम के कीड़े पालने वाले इन इल्लियों को शहतूत के पत्तों पर रख देते हैं। इल्लियाँ बड़े चाव से शहतूत के पत्ते खाकर पोषण प्राप्त करती हैं और बढ़ती हैं। जब वे अच्छी तरह बढ़ जाती हैं और अपनी कोशिकाओं में बस जाती हैं, तो अपने ऊपरी होंठ के छिद्र से धागे के रूप में एक गोंद जैसा तरल पदार्थ निकालकर कोया बनाना शुरू करती हैं। इल्ली पहले कोये के बाहरी भाग को और फिर अपने शरीर के चारों ओर बुनना जारी रखती है और अदृश्य हो जाती है। इस प्रकार रेशम के कोये प्राप्त होते हैं।

रेशम के कीड़ों को इस प्रकार बढ़ाया जाता है: अगर इल्लियों को उनके हाल पर छोड़ दिया जाए, तो दो-तीन हफ्ते के भीतर वे तितली का रूप लेकर अपने बनाए कोये को फाड़ कर बाहर निकल आती हैं। अपने कोयों से बाहर निकले रेशम के कीड़ों के नर और मादा को आँख से अलग-अलग पहचानना संभव नहीं होता। लेकिन जब उन्हें एक साथ कहीं रख दिया जाता है, तो नर कीट मादाओं के ऊपर चढ़ जाते हैं और मादा तितलियाँ उसी समय गर्भवती हो जाती हैं और उसी क्षण अपने प्रारंभिक रूप जैसी इल्लियाँ पैदा करती हैं। इल्लियों को पैदा करने वाली तितलियाँ फिर उड़कर

आँखों से ओझल हो जाती हैं। क्योंकि उन्होंने अपनी इल्लियाँ पैदा कर दी हैं, अब उनकी कोई आवश्यकता नहीं रही। निस्संदेह, रेशम के कीड़े को शहतूत के पत्तों से पोषण प्राप्त करना, अपना कोया बुनना सिखाने वाला, उसे पंख प्रदान करने वाला, उसके वंश को बनाए रखने के लिए यह जानना सिखाने वाला अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) ही है कि उसे कैसे युग्म बनाना चाहिए।

रेशम के कीड़े द्वारा बुने गए कोयों से धागे तैयार किए जाते हैं। इन धागों से रेशमी कपड़े बुने जाते हैं और बहुमूल्य वस्त्र सिले जाते हैं। एक छोटे से जीव के परिश्रम से मनुष्य बड़ा लाभ प्राप्त करता है।

मक्खियों के ऐसे पंख होते हैं जिन्हें वे बहुत तेजी से हिला सकती हैं। मक्खियाँ अपने पंखों से उड़कर भोजन ढूँढ़ती हैं और खतरे के समय तेजी से उड़कर दूर चली जाती हैं।

मक्खियों के छह पैर होते हैं। वे चार पैरों पर खड़ी होती हैं जबकि अन्य दो का प्रयोग अपने शरीर से परेशान करने वाली चीज को दूर भगाने के लिए करती हैं।

मक्खियों की आँखें उनके सिर का बड़ा हिस्सा घेर लेती हैं, इसलिए उनकी पलकें नहीं होतीं।

मक्खी और इसी तरह के अन्य कीट सदैव मनुष्यों के आस-पास मँडराते रहते हैं, उन्हें लगातार परेशान करते रहते हैं। तो इन कीटों के सृष्टि में निहित जो उद्देश्य है, उनमें से एक यह है कि मनुष्य, उनके अस्तित्व से महसूस की जाने वाली परेशानी के द्वारा यह समझें कि दुनिया एक तुच्छ स्थान है, दुनिया से विदा होना आसान है, इसलिए उन्हें दुनिया को अपनी आँखों में बड़ा नहीं समझना चाहिए।

पशुओं की कुछ योग्यताएँ मनुष्य को अचंभित कर देती हैं। इन आश्चर्यजनक योग्यताओं में से एक यह है कि जब वे खतरा महसूस करते हैं तो मरने का नाटक करते हैं। कुछ पशुओं को छूने पर वे बिल्कुल निर्जीव की तरह लंबे समय तक

स्थिर रहते हैं। फिर जब उन्हें लगता है कि खतरा टल गया है, तो चले जाते हैं। उदाहरण के लिए, चील कछुए का शिकार करती है। परंतु जब कछुआ अपने खोल में समा जाता है तो वह एक पत्थर के टुकड़े की तरह हो जाता है, उसमें खाने लायक कोई भाग नहीं रहता। यह देखकर चील कछुए को अपने पंजों में लेकर उड़ जाती है। चट्टानी इलाके के ऊपर से गुजरते हुए उसे नीचे गिरा देती है। तेजी से जमीन पर गिरने से कछुआ टूट जाता

है और चील नीचे आकर उसे खा लेती है। निस्संदेह, यह बुद्धि और विचारशक्ति से रहित प्राणी को अपना भोजन कैसे प्राप्त करना है, इसकी अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) की प्रेरणा है।

कौआ एक लोकप्रिय पक्षी नहीं है। इसलिए अपनी सुरक्षा के लिए वह स्वाभाविक रूप से बहुत सतर्क व्यवहार करता है। अपने बच्चों की रक्षा के लिए वह विभिन्न तरीकों से अपने घोंसले को छिपाता है, यहाँ तक कि इतना व्यस्त रहता है कि आसपास के खतरों पर ध्यान न दे पाने की आशंका से मादा के साथ भी अधिक समय बिताता नहीं देखा जाता। जबकि इस प्रकार की सावधानियाँ बुद्धिमान मनुष्यों के लिए विशिष्ट हैं।

कौआ आमतौर पर पशुओं के पीछे-पीछे चलता है और उनके मल से पोषण प्राप्त करता है। जब उसे भोजन मिलता है तो उसका कुछ भाग खाकर संतुष्ट हो जाता है और शेष को बाद में खाने के लिए कहीं दबाकर छिपा देता है। निस्संदेह, बुद्धिहीन, विचारशक्ति से रहित इस पक्षी को यह सब अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) ने प्रेरित किया है।

बाज भी मनुष्यों द्वारा अधिक पसंद नहीं किया जाता। इसलिए अपनी सुरक्षा के लिए उसे ऊँचाई पर उड़ने की क्षमता दी गई है। बाज अपनी तेज दृष्टि से बहुत दूर स्थित शिकार को पहचान लेता है। फिर वह ऊँचाई से तेजी से झपट्टा मारकर उसे पकड़ लेता है।

बाज की एक अन्य विशेषता यह है कि वह अपनी ओर आते हुए मनुष्य और पीठ फेरकर जाने वाले मनुष्य में अंतर कर सकता है।

इस प्रकार, बाज अपनी ओर देख रहे मनुष्यों के हाथों से भोजन नहीं छीनता और उनके द्वारा होने वाली हानि से सुरक्षित रहता है, जबकि पीठ फेरने वाले मनुष्यों के हाथ से भोजन तेजी से छीनकर भाग जाता है।

बाज एक शिकारी पक्षी है इसलिए उसके पंजे बिल्ली की तरह मजबूत होते हैं। शिकार को पकड़कर उड़ जाने के बाद उसके पंजे से बचना लगभग असंभव है।

गिरगिट नामक प्राणी बहुत धीमी गति से चलता है। इसलिए सामान्य परिस्थितियों में उसका पोषण करना कठिन है। परंतु उसे अपना कार्य सरल बनाने वाली विचित्र आँखें प्रदान की गई हैं। गिरगिट अपने हर दिशा में घूमने वाली आँखों से, भले ही वह अपने शरीर को हिलाए न, अपने आसपास के शिकार को देख सकता है। गिरगिट लंबे समय तक निर्जीव वस्तु की तरह बिना हिले-डुले रह सकता है। इन विशेषताओं के अतिरिक्त

गिरगिट उस वृक्ष का रंग भी ग्रहण कर लेता है जिस पर वह बैठा होता है। इस प्रकार वह उस वृक्ष के अंग की तरह बिना हिले बैठा रहता है। फिर जब कोई मक्खी जैसा शिकार उसके निकट आता है तो वह अपनी जीभ बाहर निकालकर बिजली की तेजी से उसे पकड़ लेता है और पुनः पूर्ववत हो जाता है। अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) ने गिरगिट को असाधारण जीभ प्रदान की है। अपनी जीभ से यह प्राणी लगभग 10 सेंटीमीटर दूर तक के शिकार को सरलता से पकड़ सकता है। साथ ही, जब गिरगिट स्वयं को शिकार करने वाले किसी बड़े प्राणी के सामने पाता है, तो वह उस प्राणी को अप्रिय लगने वाले रूप में परिवर्तित होकर शिकार होने से बच जाता है। क्योंकि यह प्राणी तेजी से नहीं हिल सकता, इसलिए अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) ने उसे शिकार और सुरक्षा की यह क्षमता प्रदान की है।

सिंह मक्खी नामक प्राणी, जब महसूस करता है कि एक मक्खी उसके निकट आ बैठी है, तो वह निर्जीव की भाँति बिना हिले बैठा रहता है। जब उसे विश्वास हो जाता है कि मक्खी नहीं हिल रही है, तो वह धीरे-धीरे उसके पास जाता है और तेजी से कूदकर मक्खी को पकड़ लेता है। संपूर्ण शरीर से उसे घेरकर उसके

भागने में बाधा उत्पन्न करता है। जब तक वह निश्चित नहीं हो जाता कि मक्खी मर गई है, तब तक उसे नहीं छोड़ता। फिर मक्खी को खाकर अपना पोषण प्राप्त करता है।

अत्यंत छोटा प्राणी होने के बावजूद कुरआन में मच्छर का उदाहरण दिया गया है। छोटा सा कीड़ा होने पर भी मच्छर एक उत्कृष्ट संरचना के साथ बनाया गया है। उड़ने के लिए पंख, चलने के लिए पैर, भोजन की खोज के लिए आँखें और खाए गए भोजन को पचाने के लिए पाचन तंत्र प्रदान किया गया है। मच्छर पूर्णांग है, उसे यह ज्ञान भी है कि भोजन की तलाश कहाँ करनी है और खतरों को कैसे पहचानना है। उसकी रचना अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) के ज्ञान, सामर्थ्य और बुद्धिमत्ता की खुली निशानी है। मनुष्य की दृष्टि में मच्छर का कोई मूल्य नहीं है। मच्छर जितना तुच्छ कीड़ा है, यदि संसार के सभी मनुष्य, जिन्न और यहाँ तक कि फरिश्ते भी मिलकर उसके निर्माण के रहस्यों को समझने का प्रयास करें तो सफल नहीं हो सकते। मच्छर का भोजन त्वचा के नीचे होता है। यह जानना कि वह इस रक्त को चूसकर अपनी भूख मिटा सकता है और अपने पंखों के सहारे भोजन को ढूँढ़ निकालना, ऐसी व्याख्या है जिसका विश्लेषण कठिन है। यदि मात्र एक मच्छर में भी इतने संकेत हों तो अन्य प्राणियों में कितनी बातें हो सकती हैं, यह कौन जान सकता है!

जलचर प्राणियों की रचना में निहित बुद्धिमत्ता

"और वही है जिसने समुद्र को तुम्हारे अधीन कर दिया ताकि तुम उसमें से ताजी मछली खाओ और अपने शरीर का आभूषण प्राप्त करो।" (नह्ल, 14)

समुद्रों और नदियों में अनेक प्रकार के प्राणी रचे गए हैं। जल में रहने वाले प्राणियों में से एक अनेक प्रजातियों वाली मछली है। मछली जल में निवास करती है इसलिए उसके पैर और फेफड़े नहीं होते। पैरों के स्थान पर उसके पास शक्तिशाली पंख होते हैं। मछली अपने पंख हिलाकर जल में कहीं भी जा सकती है।

मछलियों के शरीर आमतौर पर कवच की तरह जुड़े हुए शल्कों से ढके होते हैं। और जिनमें ये शल्क नहीं होते उनकी त्वचा मोटी होती है। मछलियाँ इन शल्कों या मोटी त्वचा के कारण बाहरी प्रभावों से अपने शरीर की सुरक्षा कर पाती हैं।

मछलियों के लिए अपना भोजन प्राप्त करने और शत्रुओं से बचने के लिए, उन्हें दृष्टि, श्रवण और गंध की अनुभूति करने की क्षमताएँ प्राप्त हैं।

मछलियों की कुछ प्रजातियाँ अन्य प्रजातियों को खाकर अपना पोषण करती हैं। इसलिए उन्हें बहुतायत में पैदा किया गया है। मादा मछलियाँ एक बार में सैकड़ों अंडे दे सकती हैं। कुछ प्रजातियों में नर मछलियाँ भी अंडों को अपने मुँह में इकट्ठा करके और तब तक संरक्षित रखकर जब तक उनमें से बच्चे न निकल आएँ, प्रजनन में सहायता करती हैं। प्रत्येक अंडे से उसी प्रजाति की मछली पैदा होती है।

कुछ जलीय जीव बिना प्रजनन के भी हजारों संतानें पैदा कर सकते हैं। कुछ प्राणी नर और मादा से प्रजनन करते हैं। इस प्रकार के समुद्री जीवों जैसे कछुए और मगरमच्छ के हाथ-पैर होते हैं।

मछलियाँ अंडों से निकलने वाले बच्चों की देखभाल नहीं कर पातीं इसलिए उनके बच्चे सभी अंगों के साथ पूर्ण विकसित अवस्था में पैदा होते हैं। इस कारण जन्म लेते ही वे वयस्क मछलियों की तरह व्यवहार करते हैं, किसी बड़े की देखरेख की आवश्यकता नहीं होती।

जैसा कि हमने पहले बताया, मछलियों की इतनी अधिक संख्या में उत्पत्ति का रहस्य यह है कि कुछ मछलियाँ अन्य प्रजातियों को खाती हैं, साथ ही कुछ पक्षी और मनुष्य भी मछलियों का शिकार करके उन्हें खाते हैं।

मछलियाँ पानी में अपने पंखों और पूँछ को तेजी से हिलाकर तेज गति से आगे बढ़ सकती हैं। वे ठीक एक जहाज की तरह संतुलित रूप से चलती हैं।

मछलियों के पूरे शरीर में फैली हुई और उनके शरीर को संतुलित रखने वाली एक विचित्र कंकाल संरचना होती है।

मांसाहारी मछलियों के पिछले जीवों को चीर-फाड़ने में मदद करने वाले बड़ी संख्या में नुकीले दाँत होते हैं। इन दाँतों से वे अपने शिकार को एक बार काटकर ही चीर सकती हैं।

सीप जैसे धीमी गति से चलने वाले जलीय जीव अपने कठोर खोल से खुद की रक्षा करते हैं। ये खोल मानो उनका घर होता है। कुछ खोल वाले जलीय जीवों के खोल में छेद होते हैं जिससे पूर्ण सुरक्षा नहीं मिल पाती। ये जीव चट्टानी इलाकों में छिपकर खुद को खतरों से बचाते हैं।

स्टारफ़िश भी काफी विचित्र प्राणी हैं। स्टारफ़िश अपना सिर खोल से बाहर निकालकर भोजन करती है। खतरा महसूस होने पर वह अपना सिर खोल के अंदर समेटकर पूरी तरह

बंद हो जाती है और स्वयं को छुपा लेती है। इस प्रकार अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) ने हर प्राणी को उसकी आवश्यकता के अनुसार सुरक्षा के साधन दिए हैं और उसे सिखाया है कि अपनी प्रजाति के निरंतर अस्तित्व के लिए कैसे सुरक्षित रहना है।

कटलफ़िश (मुर्केब बाला) की सुरक्षा प्रणाली भी काफी रोचक है। छोटी कटलफ़िश उथले पानी में रहती है जबकि बड़ी कटलफ़िश गहरे पानी में निवास करती है। यह मछली अपने द्वारा खाए गए भोजन से स्याही जैसा एक रंग उत्पन्न करती है। खतरा महसूस होने पर वह इस रंग को छोड़ देती है और गंदले पानी में तेजी से दूर भागकर आँखों से ओझल हो जाती है।

कुछ मछली प्रजातियों के पंख भी होते हैं ठीक पक्षियों की तरह। खतरे के समय वे अपने पंखों से पानी से बाहर निकल आती हैं और उड़कर उस क्षेत्र से दूर चली जाती हैं। जिसने पहले यह मछली न देखी हो, वह उसे पक्षी समझ बैठता है।

आमतौर पर मीठे पानी में रहने वाली एक अन्य मछली प्रजाति अपने शत्रुओं के विरुद्ध विष उत्सर्जित करके स्वयं की रक्षा करती है।

अगर हम अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) की सृष्टि के चमत्कारों का वर्णन करने चलें तो किताबें कम पड़ जाएँ। हमने यहाँ केवल कुछ का ही उल्लेख करके सृष्टि के अजूबों को याद दिलाना चाहा है।

पौधों की सृष्टि में निहित बुद्धिमत्ता

"क्या वे चीजें श्रेष्ठ हैं या वह जिसने आकाशों और धरती को बनाया और तुम्हारे लिए आकाश से पानी बरसाया? ऐसा पानी जिसके द्वारा हम दिल और आँखों को प्रसन्न करने वाले अद्भुत बाग़ उगाते हैं। हालाँकि तुम उसका एक भी पेड़ नहीं उगा सकते। क्या अल्लाह के साथ कोई और पूज्य हो सकता है? हर्गिज़ नहीं! किन्तु ये सच्चाई से भटके हुए लोग हैं।" (नम्ल, 60)

दुनिया में हरीतिमा की चादर जो आनंद देती है, वह इंसान को और कुछ नहीं दे सकता। मनुष्य पौधों से बहुत तरीक़ों से लाभ उठाता है। पौधों की प्रजातियों की निरंतरता उनके बीजों और गिरियों से सुनिश्चित होती है। उनके फल सुगंध देते हैं, स्वाद प्रदान करते हैं। पेड़-पौधों से जानवरों के लिए चारा बनाया जाता है, जलावन की लकड़ी प्राप्त की जाती है, घरों और जहाज़ों के निर्माण के लिए काठ तैयार किया जाता है। अन्य अनेक कार्यों में पेड़ों और दूसरे पौधों की पत्तियों, फूलों, तनों, जड़ों और शाखाओं से लाभ लिया जाता है।

यदि फल पेड़ों की डालियों के बजाय ज़मीन पर उगते, तो विभिन्न प्रकार से उपयोग किए जाने वाले पेड़ों के तने और शाखाएँ ही न होते। मनुष्य इनसे वंचित रह जाता।

पौधे बहुत उर्वर होते हैं। ऐसे कि एक बीज से सैकड़ों समान पौधे उत्पन्न हो जाते हैं। पौधों के इतने अधिक मात्रा में पैदा होने की बुद्धिमत्ता यह है कि मनुष्य अपने भोजन का एक हिस्सा उनसे प्राप्त करता है। इलाही दया और बरकत के

प्रकटन के रूप में हर प्रकार के पौधे बहुतायत से बीज देते हैं। मनुष्य इन बीजों से अपनी आवश्यकता भर का उपयोग करते हुए बचे हुए को अगली फसल तक संग्रहित करके ज़रूरत पड़ने पर खपाता है।

इसी प्रकार ज़ैतून और खजूर के पेड़ जैसे पौधे भी बहुतायत से फल देते हैं, एक बीज से हजारों फल उत्पन्न होते हैं। इस तरह पौधे अपनी प्रजातियों की निरंतरता बनाए रखते हुए मानवता की सेवा करते हैं।

अनाज के दाने उगने तक कैप्सूलों में संरक्षित रहते हैं। गिरीदार बीजों के कठोर खोल होते हैं। इन खोलों में से कुछ पर काँटे होते हैं। इस प्रकार बीज पक्षियों से सुरक्षित रहता है।

पेड़ और पौधे जीवित प्राणी हैं इसलिए जंतुओं की तरह निरंतर पोषण की आवश्यकता रखते हैं। परंतु वे अपने स्थान से हिल नहीं सकते और वहाँ उनके पोषण सुनिश्चित करने के लिए कोई गतिशील अंग भी नहीं होते। इस कारण पेड़-पौधे ज़मीन में जड़ें फैलाते हैं, इन जड़ों के माध्यम से मिट्टी से पानी सोखकर अपने तनों, शाखाओं, पत्तियों और फलों तक पहुँचाते हैं। मानो मिट्टी उनकी माँ है और जड़ें व रगें उनके मुँह। जैसे जंतुओं को उनकी माताएँ स्तनपान कराती हैं, वैसे ही मिट्टी पेड़-पौधों का पोषण करती है।

जिस प्रकार तंबू के खम्भे तंबू को खींचकर जमीन पर गिरने से रोकते हैं, उसी प्रकार पेड़-पौधों की जड़ें भी जमीन के नीचे चारों ओर फैली होती हैं जो उन्हें गिरने से बचाती हैं। यदि ये जड़ें न होतीं तो विशालकाय पेड़, खासकर तूफानी मौसम में, खड़े नहीं रह पाते और गिर जाते।

पेड़ के पत्तों में लंबाई और चौड़ाई में फैली हुई पतली और मोटी नसें होती हैं। इन पत्तों में बुनी हुई

इन नसों को यदि मनुष्य बनाने का प्रयास करे तो उसे उपयुक्त औजारों की आवश्यकता होगी, साथ ही उसे कठिन और थकाऊ श्रम करना पड़ेगा और एक पेड़ के पत्तों को पूरा करने में भी महीनों लग सकते हैं। जबकि परमात्मा की इच्छा, सामर्थ्य और हिकमत से इन पत्तों में से अरबों की संख्या में थोड़े समय में उत्पन्न होकर पहाड़ों और मैदानों को भर देते हैं।

सीप के अंदर छिपे मोती की तरह, फलों के गर्भ में बीज छिपा होता है। पौधे को अन्य तरीकों से उगाने का कोई उपाय न होने के कारण, इन्हीं बीजों के द्वारा वही पौधा पुनः उगाया जाता है। चूंकि बीज हर फल के अंदर छिपे होते हैं, इसलिए कुछ फल सड़ भी जाएं तो अन्य फलों में मौजूद स्वस्थ बीजों के द्वारा उसी फल को पुनः उगाना संभव होता है।

फल के अंदर के बीज मजबूत छिलके से सुरक्षित रहते हैं। इससे फल का रस अंदर प्रवेश कर बीज को खराब नहीं कर पाता। कुछ फलों के बीज खाने योग्य भी होते हैं और उनका तेल निकालकर विभिन्न उद्देश्यों के लिए प्रयोग किया जा सकता है।

खुदा की कुदरत से रस से भरे ताजे फल से सख्त बीज निकलते हैं। फिर इन्हीं बीजों से गुच्छों में स्वादिष्ट फल पैदा होते हैं। सूखे बीज का अंकुरित होकर जीवित होना, विशाल वृक्ष बनकर फल देना, एक बूंद तरल से जीव का उत्पन्न होना जितना ही आश्चर्यजनक है। इन घटनाओं का वास्तविक सत्य अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) के अलावा कोई नहीं जानता। इस विषय में प्राप्त ज्ञान को लिखने बैठें तो पन्ने भर जाएं।

जैसा कि हमने पहले बताया, बीज और गुठलियाँ मजबूत छिलकों से सुरक्षित होते हैं, इसलिए जमीन पर या किसी अन्य स्थान पर गिरने पर आसानी से खराब नहीं होते, भंडारों में लंबे

समय तक रखे जा सकते हैं। जब ये बीज जमीन में बोए जाते हैं तो जमीन के नीचे जड़ें फैलाते हैं और जमीन के ऊपर शाखाएं निकलती हैं। शाखाएं बढ़ने के साथ जड़ें भी बढ़कर जमीन में मजबूती से जम जाती हैं। पौधा, जड़ों के द्वारा जमीन से प्राप्त पोषक तत्वों को शाखाओं तक पहुँचाता है। इस तरह शाखाएं जमीन पर बिना गिरे, बिना टूटे खड़ी रहती हैं। जमीन से सोखा गया पानी पौधे के तने से लेकर सबसे ऊपरी हिस्से तक पहुँचता है। पौधे का हर हिस्सा अपनी आवश्यकता के अनुसार पोषण इन जड़ों के माध्यम से प्राप्त करता है। अंततः सुगंधित, रंग-बिरंगे तरह-तरह के स्वादिष्ट फल पैदा होते हैं।

जब तक फल पकने की अवस्था में होते हैं, तब तक वे गर्मी और सर्दी को सहन करने में सक्षम नहीं होते, इसलिए उनसे पहले पत्ते निकलकर फलों को आवरण की तरह सुरक्षा प्रदान करते हैं। पत्तों के बीच खाली जगह होती है। यहाँ से आवश्यकतानुसार, जरूरी सूरज की रोशनी और हवा पौधे तक पहुँचती है। इस तरह पौधा सड़ने और बिगड़ने से बच जाता है।

पेड़ों, फलों और फूलों के रंग, आकार, गंध और स्वाद अलग-अलग होते हैं। कुछ लंबे होते हैं, कुछ छोटे, कुछ बड़े और छोटे। इनके रंग लाल होते हैं, सफेद होते हैं, पीले और हरे होते हैं। फिर ये रंग अपने आप में गहरे, हल्के और मध्यम रंगों में विभाजित होते हैं। कुछ मीठे होते हैं, कुछ खट्टे, कुछ मीठे-खट्टे और कुछ कड़वे। इनकी खुशबू भी बहुत विविध होती है। कुरआन-ए-पाक ने इन मामलों में पर्याप्त स्पष्टता प्रदान की है।

अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) ने फलों को इतना मीठा बनाया है कि देखते ही मन प्रसन्न हो जाता है, आनंद मिलता है, चखे बिना ही उसका स्वाद जिह्वा पर महसूस होने लगता है। इन फलों के शरीर को अनेक प्रकार के लाभ होते हैं।

"तूर-ए-सीना में भी हमने एक और वृक्ष उत्पन्न किया जो तेल और खाने वालों के लिए साथ देने योग्य (जैतून) देता है।" (मोमिनून, 20) इस आयत में वर्णित है कि कैसे अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) पत्थर और पानी के बीच से स्वादिष्ट, लाभदायक, शुद्ध जैतून निकालता है, ठीक वैसे ही जैसे पेट में खून और भोजन के अवशेषों के बीच से शुद्ध, सफेद दूध और मधुमक्खी से विभिन्न रंगों का रोगनाशक शहद निकलता है। मनुष्यों के उपयोग के लिए प्रस्तुत इन नेमतों को यदि एक जगह इकट्ठा किया जाए तो नदियों की तरह बह निकलेगा।

अनार जब तक पकता है तब तक डाल पर लटका रहता है। जब पककर मीठा हो जाता है, तभी जमीन पर गिरता है।

खरबूजा, तरबूज और कद्दू जैसे पौधों की शाखाएं पतली और कमजोर होती हैं, जो पानी को रिसने देती हैं। इस प्रकार के पौधों को अधिक पानी की आवश्यकता होती है, इसलिए ये पेड़ों पर नहीं बल्कि सीधे जमीन पर फैले हुए उगते हैं। यदि ये पौधे पेड़ पर उगते तो पकने से पहले ही शाखाएं उन्हें सह न पातीं और वे जमीन पर गिर जाते।

पौधे ठीक उसी मौसम में उगते हैं जब उनकी आवश्यकता होती है। इस तरह लोग समय पर फल खाकर अपने स्वास्थ्य की रक्षा करते हैं और आवश्यक विटामिन उनके माध्यम से प्राप्त करते हैं।

खजूर एक ऐसा वृक्ष है जो जानवरों की तरह गर्भाधान से बढ़ता है। इसलिए जानवरों की तरह इसके नर और मादा होते हैं।

अनेक बीमारियों में पौधों से लाभ उठाया जाता है। ये सभी मूलतः पानी से बने होने के बावजूद हर एक अलग औषधि का स्रोत है।

अल्लाह की अज़मत के समक्ष इंसान की अनुभूतियाँ

"सातों आसमान, ज़मीन और इनमें जो कुछ भी है, सब उसकी तस्बीह करते हैं। उसकी प्रशंसा के साथ तस्बीह न करने वाला कोई भी नहीं है। लेकिन तुम उनकी तस्बीह को समझ नहीं पाते। वह बड़ा सहनशील, क्षमाशील है।" (इस्रा, 44)

"लगभग ऊपर से आसमान फट जाएगा! फ़रिश्ते भी अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह कर रहे हैं और ज़मीन वालों के लिए माफ़ी की दुआ कर रहे हैं। अच्छी तरह जान लो कि अल्लाह बड़ा क्षमाशील, दयावान है।" (शूरा, 5)

"गरज अल्लाह की प्रशंसा के साथ तस्बीह करती है। फरिश्ते भी उसके प्रताप से तस्बीह करते हैं..." (राद, 13)

इस किताब में हमने जिन सृष्टि चमत्कारों और उनकी बुद्धिमत्ता का वर्णन किया है, वे सभी सृष्टा की सामर्थ्य और महानता के प्रमाण हैं। अपने सबसे निकट यानी स्वयं को देखने पर आप पाएंगे कि आप कितनी अद्भुत रचना हैं। जिस धरती पर आप खड़े हैं, उसे देखें तो पाएंगे कि उसके नीचे असंख्य जीव रहते हैं, पौधे उगते हैं, ऊपर विशाल पर्वत खड़े हैं, समुद्र और नदियाँ उसे घेरे हुए हैं, और अनगिनत प्राणी उस पर विचरण करते हैं।

जब आप दुनिया की विशालता के बारे में सोचते हैं, तो समझ आता है कि इसके हर कोने में क्या-क्या हो रहा है, यह जानना मनुष्य के लिए संभव

नहीं है। जैसा कि विद्वानों ने कहा है, पृथ्वी और उसकी सामग्री आकाश की तुलना में मरुस्थल में फेंके गए एक छल्ले के समान है। जब आप सोचते हैं कि सूर्य पृथ्वी से 160 गुना बड़ा है और कुछ तारे पृथ्वी से 100 गुना बड़े हैं, और पृथ्वी पर पड़ने वाली रोशनी सूर्य, चंद्रमा और आकाश भर के तारों से आती है, और इन सबको समेटे ब्रह्मांड की विशालता को समझने की कोशिश करते हैं, तो आपका दिमाग चकरा जाता है।

हम अपनी छोटी-छोटी आँखों से सूर्य, चंद्रमा, तारों और उन्हें समेटे आकाश को देखते हैं। इस तरह हम समझते हैं कि वे कितने विशाल हैं, हालाँकि उनकी दूरी के कारण हम उनकी भयावह गति को महसूस नहीं कर पाते।

आकाशीय पिंड अत्यंत विशाल हैं। आकाशीय पिंडों के महत्व को ध्यान में रखते हुए अल्लाह (स.व.) ने कुरआन की विभिन्न आयतों में इनकी शपथ ली है:

"राशियों वाले आकाश की..." (बुरूज, 1)

"आकाश और तारिक (प्रभात तारे) की शपथ। तुम क्या जानो कि तारिक क्या है? (वह) अंधकार को चीरने वाला तारा है।" (तारिक, 1-3)

"नहीं! मैं तारों के स्थानों की शपथ खाता हूँ..." (वाक़िआ, 75)

यदि आप थोड़ा और दूर देखें, ऊपरी लोकों में फरिश्तों और अज्ञात प्राणियों के बारे में सोचें, तो आप समस्त सृष्टि के प्रबंधन को अपने हाथ में रखने वाले अल्लाह (स.व.) की महानता को बेहतर समझेंगे। जिब्राईल (अ.स.) ने पैगंबर (स.अ.व.) को इसराफील (अ.स.) के बारे में बताते हुए कहा: "काश तुम इसराफील को देखते! वही अर्श को अपने कंधों पर उठाए हुए है। उसके पैर पृथ्वी की सबसे निचली परत के अंत में हैं।" वास्तव में अल्लाह

(स.व.) ने कहा है: *"उसका सिंहासन आकाशों और धरती को समेटे हुए है, उनकी रक्षा करना उसके लिए कठिन नहीं।"* (बक़रा, 255) हमें इन पर विचार कर सृष्टा की महानता, सामर्थ्य, ज्ञान और बुद्धिमत्ता को समझने का प्रयास करना चाहिए।

जिस ब्रह्मांड में मन की पहुँच से परे विशाल और असंख्य पिंड हैं, उसके न तो कोई स्तंभ हैं, न ही वह किसी छत से लटका हुआ है। सिर्फ यह सोचना ही अल्लाह (स.व.) को जानने, उसकी महानता को समझने के लिए काफी है। जब कोई बुद्धिमान व्यक्ति सृष्टि के चमत्कारों पर विचार करता है, तो उसका ज्ञान और दृढ़ विश्वास बढ़ता है, वह अपने रब के सामने झुकने की आवश्यकता महसूस करता है। निस्संदेह, लोगों द्वारा सीख लेने और इन सृष्टि तथ्यों को समझने का स्तर एक जैसा नहीं है। हर व्यक्ति अपने हिसाब से इससे लाभ उठाता है। सबसे बड़ा ज्ञान का स्रोत कुरआन पढ़ना, उसमें लिखी बातों को समझना और परहेज़गार बनना है। अल्लाह (स.व.) को जानने और पूर्ण विश्वास रखने का यही सच्चा मार्ग है।

जब हम सोचते हैं कि पैगंबर (स.अ.व.) ने इसरा के दौरान आकाश में सिद्रतुल मुनतहा तक यात्रा की, मन की पहुँच से परे चीजें देखीं, दुनिया और आखिरत से संबंधित सच्चाइयों को जाना, यहाँ तक कि जिब्राईल (अ.स.) से दो धनुषों की दूरी तक पहुँचे, तो हम समझते हैं कि पैगंबर (स.अ.व.) कितना अधिक जानते थे। फिर भी उन्हें यह कहने का आदेश दिया गया: *"हे मेरे रब, मेरा ज्ञान बढ़ा।"* हमें भी अधिक सोचना चाहिए, अधिक प्रयास करना चाहिए और अधिक सीखना चाहिए।